0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hydera

श्रृंगार-शतक

बृजभाषा काव्यानुवाद सहित

भर्तृहरि

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

ublic Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi,

Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Pen

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyde

१०७

श्रृंगार-शतक

भर्तृहरि

महाराजा श्री प्रतापसिंह जूदेव

के

बृजभाषा काव्यानुवाद सहित

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

प्रकाशक :
चतुर्वेदी प्रकाशन समिति
कमतरी, आगरा (उ. प्र.)
शाखा : १८–७–३, बेगमबाज़ार
हैदराबाद दक्षिण (आं. प्र.)

नवीन संस्करण : १००० प्रतियाँ
सं. २०२४ वि.

मूल्य : १.०० रुपया

प्राप्ति स्थान :
भारतीय पुस्तक भंडार
बेगमबाज़ार, हैदराबाद (आं. प्र.)

मुद्रक :
कर्मशियल प्रिंटिंग प्रेस
बेगमबाज़ार, हैदराबाद

nskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyde

दान-वीर धर्मपरायण

स्व. राजा बंकटलाल जी बद्रुका

की पवित्र स्मृति में
सादर समर्पित

निधन तिथि : १६-५-१९६६ ई.

—प्रकाशक

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyde

॥ श्री वृन्दावन विहारिणे नमः ॥

भर्तृहरि विरचितं

अथ श्रृंगार शतकम्

मंगलाचरणम्

शम्भुस्वयम्भुहरयो हरिणेक्षणानां
येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः ।
वाचामगोचरचरित्रविचित्रताय
तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥१॥

दोहा—

विधि हरिहरहू करत हैं, मृगनैनी की सेव ।
वचन अगोचर चरित गति, नमो कुसुमसर देव ॥१॥

जिसने शिव, ब्रह्मा और विष्णु को भी हरिण के समान नेत्रों वाली स्त्रियों के गृहकार्य करने के लिए दास बना रखा है और जिसके चरित्र वाणी से वर्णन नहीं हो सके हैं, उस पुष्पायुध कामदेव को हम नमस्कार करते हैं ।

अथ स्त्री प्रशंसा

स्मितेन भावेन च लज्जया भिया
पराङ्मुखस्वैरर्द्धकटाक्षवीक्षणैः ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

वचोभिराष्यर्याकलहेन लीलया
समस्तभावैः खलु बन्धनं स्त्रियः ॥२॥

दोहा—

रस में त्यौं ही रोष में, दरसत सहज अनूप ।
बोलनि चलनि चितौनि में, वनिता बंधन-रूप ॥२॥

मन्द मन्द मुसकुराना लज्जा करना, मुख फेर लेना, तिरछी दृष्टि से देखना मीठी-मीठी बातें करना, ईर्ष्या करना, कलह करना, और अनेक प्रकार के मान प्रगट करना इत्यादि सब बातों से स्त्री पुरुष का बन्धन स्वरूप ही है ।

भ्रूचातुर्यात्कुञ्चिताक्षाः कटाक्षाः
स्निग्धा वाचो लज्जितान्ताश्च हासाः
लीलामन्दं प्रस्थितञ्च स्थितञ्च
स्त्रीणामेतद् भूषणं चायुधञ्च ॥३॥

छप्पय—

करत चातुरी भौंह नयनहू नचत चितैबौ ।
प्रगटत चित कौ चाव चाप सों मृदु मुसकैबौ ।
दुरत मुरत सकुचात गात अरसात जह्मावत ॥
उझकत इत उतदेख चलत ठिठकत छबि छावत ।
ऐ आभूषण तियन के अंग माँहि शोभा धरन ।
अरु ये ही शस्त्र समान हैं, पुरुष मन मृग वस करन ॥३॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyde

भौंह टेढ़ी कर कटाक्ष करना, मधुर-मधुर बात बोलना, लज्जित होकर मुसकुराना, लीला से मन्द-मन्द चलना और ठहर जाना इत्यादि भाव स्त्रियों के भूषण और शस्त्र हैं, अर्थात् स्त्री इन्हीं भावों से पुरुष को वश में कर लेती है।

क्वचित्सुभ्रूभंगैः क्वचिदपि च लज्जापरिगतैः
क्वचिद्भीतित्रस्तैः क्वचिदपि च लीलाविलसितैः।
नवोढानामेभिर्वदनकमलैर्नेत्र चलितैः
स्फुरन्नीलाब्जानां प्रकरपरिपूर्णा इव दशः ॥ ४ ॥

छप्पय—

कबहुँ भौंह कौ भंग, कबहुँ लज्जायुत दरसत।
कबहुँक ससकत संकि, कबहुँ लीला रस बरषत ॥
कबहुँक मुख मृदुहास, कबहुँ हित वचन उचारत।
कबहुँक लोचन फेर चपल चहुँ ओर निहारत ॥
छिन छिन सुचरित्र विचित्र करि, भरे कमल जिमि दशहुँ दिशि।
ऐसी अनूप नारी निरख हरषत रहिये दिवस निशि ॥ ४ ॥

नवोढ़ा स्त्रियाँ अपने मुख कमल में स्थित चंचल नेत्रों को इधर-उधर फेरती हुई कभी भृकुटियों को टेढ़ी कर लेती है, कभी लाज से सिर झुका लेती हैं, कभी भयभीत हो जाती हैं और कभी लीलामय विलास करने लगती है, इस तरह जिधर वह अपनी दृष्टि फेरती हैं, उधर ही नील कमलों के समूहों का अनुभव होने लगता है।

वक्त्रं चन्द्रविकासि पंकजपरीहासक्षमे लोचने
वर्णः स्वर्णमपाकरिष्णुरलिनीजिष्णुः कचानाञ्चयः।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

वक्षोजाविभकुम्भसंभ्रमहरौ गुर्वी नितम्ब स्थली
वाचां हारि च मार्दवं युवतिषु स्वाभाविकं मण्डनम् ।।५।।

छप्पय—

करत चन्द्र इव विशद वदन अद्‌भुत छवि छाजत ।
कमलन विहँसित नैन रैन दिन प्रफुलित राजत ।।
करत कनक द्युतिहीन अंग आभा अति उमगत ।
अलकन जीते भौंर कुचन कर कुम्भ किये हत ।
मृदुता मंरोर मारे सुमन सुख सुवास मृगमद कदन ।
ऐसौ अनूप तियरूप लखि छाँहधूप नहिं गिनत मन ।।५।।

चंद्रमा के समान उज्जवल मुख, कमल की भी हँसी करने वाले नेत्र, सुवर्ण की दमक को मंद करने वाली देह की कांति, भ्रमरियों के समूहों की शोभा को जीतने वाले केश, हस्ती के कुम्भ स्थल की शोभा हरने वाले दोनों स्तन, विशाल दोनों नितम्ब, और मनहरण करने वाली कोमल वाणी, ये सब स्त्रियों के स्वाभाविक भूषण हैं ।

स्मितं किञ्चिद्वक्त्रे सरलतरलो दृष्टिविभवः
परिस्पन्दो वाचामभिनवविलासोक्तिसरसः ।
गतानामारम्भः किसलयितलीलापरिकरः
स्पृशन्त्यास्तारुण्यं किमिह न हि रम्यं मृगदृशः ।।६।।

दोहा :—

मन्द हँसन, तीखे नयन, सरस वचन सविलास ।
गजगमनी रमणी निरखि, को न करै अभिलाष ।।६।।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyde

मन्द-मन्द मुसकुराता हुआ मुख, सीधे और चंचल दृष्टिपात, नवीन विलास की उक्ति से मधुर-मधुर बात करना, और नवीन पल्लव के समान मन्द-मन्द गति से गमन करना, इत्यादि तरुणी स्त्रियों के हाव-भाव क्या मनोहर नहीं होते हैं।

द्रष्टव्येषु किमुत्तमं मृगदृशां प्रेमप्रसन्नं मुखं
घ्रातव्येष्वपि किं तदास्यपवनः श्राव्येषु किं तद्वचः।
किं स्वाद्येषु तदोष्ठपल्लवरसः स्पृश्येषु किं तत्तनु-
र्ध्येयं किं नवयौवनं सहृदयैः सर्वत्र तद्विभ्रमः ॥७॥

छप्पय—

कहा देखिवे योग्य ? प्रिया कौ अति प्रसन्न मुख।
कहा सूँघिये सोधि ? श्वास सौगन्धि हरत दुख।
कहा दीजिये कान ? प्राण प्यारी की बातन।
कहा लीजिये स्वाद ? अधर के अमृत अघात न ॥
परसिये कहा ? वाकौ सुवपु, ध्यान कहा ? जोवन सुछवि।
सब भाँति सकल सुख कौ सदन, जान सुयश गावत सुकवि ॥७॥

रसिकों के देखने योग्य उत्तम वस्तु क्या है ? मृगनयनी स्त्रियों का प्रसन्न मुख, सूंघने योग्य उत्तम पदार्थ क्या है ? स्त्रियों के मुख की भाफ; सुनने योग्य क्या है ? स्त्रियों के मधुर वचन; स्वादिष्ट उत्तम पदार्थ क्या है ? स्त्रियों के ओष्ठ पल्लव कारस; स्पर्श करने योग्य क्या है ? स्त्रियों का शरीर; ध्यान करने योग्य क्या है ? नवयुवती का नव-यौवन और उसके विलास।

एताः स्खलद्वलयसंहतिमेखलोत्थ-
झङ्कारनूपुररवाहृतराजहंस्यः।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

कुर्वन्ति कस्य न मनो विवशं तरुण्यो
वित्रस्तमुग्धहरिणीसदृशैः कटाक्षैः ॥८॥

दोहा—

नूपुर किंकिन किंकनी, बोलत अमृत बैन।
काको मन बस नहिं करत, मृगनैनिन के नैन ॥८॥

जिन्होंने चंचल कङ्कणों के शब्द, क्षुद्रघंटिकाओं (कोंदनी) की ध्वनि और नूपुर के झनकार से राजहंसिनियों की चाल को जीत लिया है ऐसी नवयुवती भयभीत हरिणी के समान नेत्रपात कर किसके मन को विवश नहीं कर देती है।

कुङ्कुम पङ्ककलङ्कितदेहा गौरपयोधरकम्पितहारा
नूपुरहंसरणत्पदपद्मा कं न वशीकुरुते भुवि रामा ॥९॥

दोहा—

हार हलैं, कुचं कनक लग, केसर रंजित देह।
नूपुर ध्वनि पदकमल की, केहि न करैं वस येह ॥९॥

केशर की खौर से जिसका देह शोभित हो रहा है, जिसके गोरे-गोरे स्तनों पर हार झूम रहा है और नूपुर रूपी हंस जिसके चरणरूपी कमलों में शब्द कर रहे हैं, ऐसी सुन्दरी स्त्री इस पृथ्वी पर किस पुरुष को अपने वश में नहीं कर लेती है।

नूनं हि ते कविवरा विपरीतबोधा
ये नित्यमाहुरबला इति कामिनीनाम्।
याभिर्विलोलतरतारकदृष्टिपातैः
शक्रादयोऽपि विजितास्त्वबलाः कथं ताः ॥१०॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyde

दोहा—

कामिनि को अबला कहत, वे नर मूढ़ अचेत।
इन्दादिक जीते दृगन, सो अबला किहि हेत ॥१०॥

वे कविवर निस्सन्देह उलटी समझ वाले हैं, जो स्त्रियों को अबला कहते हैं। भला जो अपनी नेत्रों की पुतलियों के चंचल कटाक्षों से इन्द्रादिकों को भी वश कर लेती हैं, वे अबला किस प्रकार हो सकती हैं।

नूनमाज्ञाकरस्तस्याः सुभ्रुवो मकरध्वजः।
यतस्तन्नेत्रसञ्चारसूचितेषु प्रवर्तते ॥११॥

दोहा—

कामिनि हुकमी काम यह, नैन सैन प्रगटात।
तीन लोक जीत्यौ मदन, ताहि करत निज हात ॥११॥

निस्संदेह कामदेव स्त्रियों का आज्ञाकारी सेवक है, क्योंकि जिसकी ओर वह सैन कर देती हैं, उसी पुरुष को वश कर लेती हैं।

केशाः संयमिनः श्रुतेरपि परं पारं गते लोचने
अन्तर्वक्त्रमपि स्वभावशुचिभिः कीर्णं द्विजानां गणैः।
मुक्तानां सतताधिवासरुचिरं वक्षोजकुम्भद्वय-
मित्थं तन्वि वपुः प्रशान्तमपि ते क्षोभं करोत्येव नः ॥१२॥

छप्पय—

संयम राखत केश, नयनहू काननचारी।
मुखहू मांहि पवित्र रहत द्विजगन सुखकारी॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

उर पर मुक्ताहार रहत निशिदिन छवि छायौ।
आननचन्द उजास रूप उज्जल दरसायौ॥
तेरौ तन तरुणी मृदुल अति, चलत चाल धीरज सहित।
सब भाँत्ति सतो गुण कौ सदन, तऊ करत अनुरागचित्त॥१२॥

केश तेलयुक्त कन्घी से सँवारे हुए हैं, भीतर से मुख स्वच्छ उज्ज्वल दाँतों की पंक्ति से भरा हुआ है; स्तन निरन्तर मुक्ताफल के हारों से शोभायमान हैं, हे कृशाङ्गि ! ऐसा जो आपका शरीर है, वह शीतल होने पर भी मेरे मन में क्षोभ ही उत्पन्न करता है।

मुग्धे धानुष्कता केयमपूर्वा त्वयि दृश्यते।
यदाहरसि चेतांसि गुणैरेव न सायकैः॥ १३॥

दोहा—

अति अद्भुत कमनैत्त तिय, कर में वाण न लेत।
देखौ यह विपरीत गति, गुण ते बाँधे देत॥१३॥

हे सुन्दरि ! तेरी यह धनुष विद्या में कुशलता अत्यन्त विलक्षण ज्ञात होती है. जो कि प्रत्यञ्चा अथवा अपनी चतुराई से ही पुरुष के हृदय को वेध देती है, वाणों से नहीं।

सति प्रदीपे सत्यग्नौ सत्सु तारारवीन्दुषु।
विना मे मृगशावाक्ष्या तमोभूतमिदं जगत्॥ १४॥

दोहा—

अनल दीप रवि शशि नखत, यद्यपि करत उज्यार।
मृगनैनी विन मोहिं यह, लागत जगत्त अँध्यार॥ १४॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyde

यद्यपि दीपक, अग्नि, तारागण, सूर्य और चन्द्रमा ये सब प्रकाशमान पदार्थ विद्यमान हैं, परन्तु मुझको तो मेरी मृगनयनी स्त्री के बिना ये सब संसार अन्धकारावृत ही दीखता है।

उद्वृत्तः स्तनभार एष तरले नेत्रे चले भ्रूलते
रागान्धेषु तदोष्ठपल्लवमिदं कुर्वन्तु नाम व्यथाम् ।
सौभाग्याक्षरपंक्तिरेव लिखिता पुष्पायुधेन स्वयं
मध्यस्थापि करोति तापमधिकं रोमावलिः केन सा ॥ १५ ॥

दोहा—

अरुण अधर कुच कठिन, दृग भौंह चपल दुख देत ।
सुथिर रूप रोमावली, ताप करत किहि हेत ॥ १५ ॥

उन्नत (उठे हुए) कुचों का भार, चंचल नेत्र, चंचल भृकुटि और दोनों अधर पल्लव ये रसिकों के शरीर में पीडा करें तो करें, क्योंकि तेरे मस्तक में सौभाग्य के अक्षरों की पंक्ति कामदेव ने स्वयं अपने हाथ से लिखी है, परन्तु यह तेरी रोमावली मध्यस्थ हो कर भी अधिक पीड़ा देती है, नहीं मालूम इसका क्या कारण है; सारांश यह है कि उन्नत, चंचल और रागवान् तो प्रायः पीड़ा देती ही है, परन्तु मध्यस्थ रूप यह रोमावली क्यों अधिक ताप उत्पन्न करती है अर्थात् क्यों विपरीत करती है।

गुरुणा स्तनभारेण मुखचन्द्रेण भास्वता ।
शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा ॥ १६ ॥

छप्पय—

केश राहु सम जान, चन्द्र सौ सोहत आनन ।
द्वादश में द्वै अर्क नैन केतुहि अलकानन ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

मन्दहास है शुक्र, बुधै वानी कहि जानौ ।
सुर-गुरु जान उरोज कर्ण मंगलहिं बखानौ ॥
अति मन्द चाल सोइ शनैश्चर, महा मनोहर युवति यह ।
तेहि सब फलदायक देखियत, जाको सेवत नवों ग्रह ॥ १६ ॥

वह स्त्री गुरु (बृहस्पति) स्तनों के भार से, भासवान् (प्रकाश युक्त) होने से सूर्य, मुख रूपी चन्द्रमा से चन्द्र और मन्दगामी दोनों चरणों से शनैश्चर (शनि) इस प्रकार गृहमयी-सी दीखती है ।

तस्याः स्तनौ यदि घनौ जघनं विहारि
वक्त्रं च चारु तव चित्त किमाकुलत्वम्
पुण्यं कुरुष्व यदि तेषु वतास्ति वाञ्छा
पुण्यैर्विना न हि भवन्ति समीहितार्थाः ॥१७॥

कुण्डलिया—

रे चित्त जो चाहे रमण, कुच कठोर नवनार ।
तौ तू कर कुछ सुकृत अब, मिलै जु वह सुकुमार ॥
मिलै जु वह सुकुमार वंक भौं जघन विहारी ।
सुन्दर मुख मृदुहास, कंज सी अँखियाँ कारीं ॥
यौवन मद भरपूर, प्रेम सों सदा प्रफुल्लित ।
मत्त अधीर, धर धीर, मिलै वह अवस अरे चित्त ॥ १७ ॥

हे चित ! यदि उस स्त्री के कुच कठोर हैं और जघन विहार करने योग्य है उसका मुख सुन्दर है तो तू उसको देख कर क्यों व्याकुल होता है, यदि उनमें तेरी इच्छा है तो पुण्य कार्य कर, क्योंकि बिना पुण्य के मनोरथ सिद्ध नहीं होते हैं ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyde

मात्सर्यमुत्सार्य विचार्य कार्यमार्याः समर्यादमिदं वदन्तु ।
सेव्या नितम्बाः किमु भूधराणामुत स्मरस्मेरविलासिनीनाम्
॥ १८ ॥

दोहा—

नीच वचन सुन अनख तज, करहु काज लहि भेव ।
कै तौ सेवो गिरवरन, कै कामिनि कुच सेव ॥

हे श्रेष्ठ पुरुषो ! मत्सरता को त्याग कर मर्यादासहित विचार पूर्वक कहो कि या तो पर्वतों के ही नितंब सर्वने योग्य है, और या कामदेव की उमंग से भरी हुई स्त्रियों के ही नितम्ब सेवन योग्य हैं। पर्वत के मध्य भाग और स्त्रियों के कटि-पश्चात् भाग को नितम्ब कहते हैं।

संसारेऽस्मिन्नसारे परिणतितरले द्वे गती पण्डितानां
तत्त्वज्ञानामृताम्भःप्लुतललितधियां यातु कालः कदाचित ।
नोचेन्मुग्धांगनानां स्तनजघनभराभोगसंभोगिनीनां
स्थूलोपस्थस्थलीषु स्थगितकरतलस्पर्शलोलोद्यतानाम् ॥१९॥

छप्पय —

अल्पसार संसार तहाँ द्वै बात शिरोमणि ।
ज्ञान अमृत के सिन्धु मगन ह्वै रहै बुद्धिवनि ॥
नित्यानित्य विचार सहित सब साधन साधें ।
की यह प्रौढ़ा नारि धारि उर में आराधें ॥
चैतन्य मदन अंकुश परसि, सिसकत मसकत करत रिस ।
रस,मसत कसत विलसत हँसत, इह विधि वितवत दिवस निसि ॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

इस आसार संसार में जिसकी अन्ता अवस्था अति चंचल है, तिसमें पंडितों की दो ही उत्तम गति हैं, या तो तत्त्व ज्ञानरूपी अमृतरस में स्नान करने वाली जिनकी निर्मल बुद्धि है, उन्हीं का समय अच्छा व्यतीत होता है अथवा अपने पुष्ट स्तन और जघन से जो स्त्री भोग में सुखदाई है उनके शरीर पर हाथ दिये चंचलता से जो उद्योग में तत्पर हैं, उनका काल भली भांति व्यतीत होता है।

मुखेन चन्द्रकान्तेन महानीलैः शिरोरुहैः ।
पाणिभ्यां पद्मरागाभ्यां रेजे रत्नमयीव सा ॥ २० ॥

दोहा—

चन्द्रकान्त सम मुख लसत, नीलम केशहि पाश ।
पद्म-राग सम कर लसैं, नारी रत्न प्रकाश ॥ २० ॥

चन्द्रकान्त से मुख, महानील से केश और पद्मराग के समान रंग वाले दोनों हाथों से वह स्त्री रत्नों की खान के समान शोभायमान है।

संमोहयन्ति मदयन्ति विडम्बयन्ति
निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति ।
एताः प्रविश्य सदयं हृदयं नराणां
किं नाम वामनयना समाचरन्ति ॥२१॥

सोरठा—

मोह, प्रलाप, प्रमाद, ज्ञान-नाश निर्लज्जता ।
शोक, कलेश, विषाद, कहा न कर हिय घुस त्रिया ॥२१॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

ये सुन्दर नेत्र वाली स्त्री मनुष्य के कोमल हृदय में प्रवेश कर उसको मोह लेती हैं, मत्त कर देती हैं। उसकी विडम्बना करती हैं, उसको डाटती हैं, उसको रमण कराती हैं, और उसको अपने विरह से दुःखी करती हैं, फिर क्या रहा जिसको यह नहीं करतीं, अर्थात् ये सब कुछ करने को समर्थ है ।।

विश्रम्य यिश्रम्य वनद्रुमाणां छायासु तन्वी विचचार काचित् ।
स्तनोत्तरीयेण करोद्धृतेन निवारयन्ती शशिनो मयूखान ।।२२

दोहा—

नारि बिरहिनी तरु तरैं, बैठी शशि सों भाग ।
चन्द्रकिरण कों चीर सों, दूर करत दुख पाग ।।२२।।

कोई एक स्त्री वन के वृक्षों की छाया में वेर-वेर विश्राम करती हुई अपना अंचल (स्तनों के ऊपर का साड़ी का भाग) हाथ से उठा उससे चन्द्रमा को किरणों को रोकती हुई जाती है। यह कृष्णभिसारिका नायिका है।

अथ भोगादिलक्षणम्

अदर्शने दर्शनमात्रकामा दृष्ट्वा परिष्वंगरसैकलोलाः ।
आलिंगतायाः पुनरायताक्ष्यामाशास्महे विग्रहयोरभेदम् ।।२३।।

छप्पय—

बिन देखैं मन होय वाइ कैसे कर देखैं ।
देखैं ते चित होय अंग आलिंगन सेषैं ।
आलिंगन ते होत याहि तनमय करि राखैं ।।
जैसे जल अरु दूध, एक-रस त्यौं अभिलाषैं ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

मिल रहे तऊ मिलबौ चहत, कहा नाम या विरह कौ ।
वरण्यौ न जात अद्भुत चरित, प्रेम-पाठ की गिरह कौ ॥२३॥

जब तक हम स्त्री को नहीं देखते तब तक तो हमको उसके देखने ही की इच्छा रहती है, और जब देख लेते हैं तब उससे आलिंगन रस का सुख चाहते हैं और जब उसका आलिंगन भी प्राप्त हो जाता है तब यह इच्छा करते हैं कि यह मृगनयनी हमारे शरीर से अलग न हो ॥

मालती शिरसि जृम्भणोन्मुखी चन्दनं वपुषि कुङ्कुमान्वितम् ।
वक्षसि प्रियतमा मनोहरा स्वर्ग एष परिशिष्ट आगमः ॥२४॥

दोहा—

केसर सी अँगिया सनी, वनी नयन की नोंक ।
मिली प्राण प्यारी मनौ, घर आयौ सुर लोक ॥२४॥

खिले हुए मालती के पुष्पों की माला गले में पड़ी हो, केसरयुक्त चन्दन शरीर में लगा हुआ हो, और सुन्दर प्यारी स्त्री छाती से लिपटी हो तो जान लो कि स्वर्ग का शेष सुख यहीं प्राप्त हुआ है ॥२४॥

प्राङ्मामेति मनागभाभितगुणं जाताभिलाषं ततः ।
सव्रीडं तदनु श्लथोद्यतमनुप्रत्यस्तधैर्यं पुनः ।
प्रेमार्द्रं स्पृहणीयनिर्भररहःक्रीडाप्रगल्भं ततो
निःशङ्कांगविकर्षणादिकसुखं रम्यं कुलस्त्रीरतम् ॥२५॥

छप्पय—

नाना कहि गुण प्रकट करति अभिलाष लाज जुत ।
शिथिल होय धर धीर प्रेम की इच्छा करि उत ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

निर्भय रस कों लेत, सेज रणखेतहिं माहीं ।
क्रीडा माँहि प्रवीण, नारि सुखिया मन माहीं ।
यह सुरत माँझ अति ही सुरत, करत हरत चित गति करैं ।
कुलवधू कामिनी केलि कर कलह काम की सब हरैं ॥ २५ ॥

पहिले तो नहीं-नहीं, फिर अभिलाषा उत्पन्न होना, और लज्जा से शरीर का ढीला कर देना, धीरता त्याग देना, प्रेमरस में भीगना, सराहने योग्य एकान्त क्रीडा का चातुर्य विस्तार करना, और फिर निडर हो कर अंग सेचने का अधिक सुखलाभ करना इत्यादि मनोहर गुण उसमें हैं, इसलिए निश्चय जान लो कि स्त्री ही रमण करने योग्य है ।

उरसि निपतितानां स्रस्तधम्मिल्लकानां
मुकुलितनयनानां किञ्चिदुन्मीलितानाम् ।
सुरतजनितखेदस्विन्नगण्डस्थलीना-
मधरमधु वधूनां भाग्यवन्तः पिबन्ति ॥ २६ ॥

छप्पय—

खुले केश चहुँ ओर फैल फूलन कौ बरसत ।
मदमद छाके नैन, दुरुत उघरत से दरसत ।
सुरत खेदके स्वेद कलित सुन्दर कपोल गहि ।
करत अधर रसपान परत अमृत समान लहि ।
ते धन्य धन्य सुकृती पुरुष, जे ऐसे उरझे रहत ।
हित भरे, रूप-यौवन भरे, दम्पत्ति सुख-सम्पति लहत ॥ २६ ॥

छाती पर लेटी हुई है, केश जिनके खुल रहे हैं, आधे नेत्र जिनके मुंद रहे हैं, जो कुछ-कुछ हिल रही हैं और मैथुन के परिश्रम से जिनके

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

कपोलों पर प्रस्वेद झलक रहे हैं, ऐसी स्त्रियों के अधरामृतको भाग्यवान पुरुष ही पान करते हैं।

आमीलितनयनानां यः सुरतरसोऽनुसंविदं कुरुते।
मिथुनैर्मिथोऽवधारितमवितथमिदमेव कामनिर्वहणम्॥ २७॥

दोहा—

मृगनैनी आलस भरी, सुरत सेज सुख साज।
पूजहिं दम्पति काम मिल, करहिं सुमंगल काज॥ २७॥

आलस्य भरे नेत्र वाली स्त्रियों की काम से तृप्ति करना ही काम का पूजन है, इसको स्त्री-पुरुष दोनों परस्पर जानते हैं।

इदमनुचितमक्रमश्च पुंसां यदिह जरास्वपि मान्मथा विकाराः।
यदपि च न कृतं नितम्बिनीनां स्तनपतनावधि जीवितं रतं वा। २८।

दोहा—

विधिना द्वै अनुचित करी, वृद्ध नरन तन काम।
कुच ढरकतहू जगत में, जीवत राखी वाम॥ २८॥

यह विधाता ने बड़ा अनुचित कार्य किया कि मनुष्यों के वृद्धावस्था में भी काम विकार प्रगट होता है और ऐसे ही स्त्रियों को भी ऐसा न बनाया कि जब तक उनके स्तन न गिरें, तभी तक जीएँ अथवा तभी तक काम-चेष्टा उनको उत्पन्न हो।

एतत्कामफलं लोके यद् द्वयोरेकचित्तता।
अन्यचित्तकृते कामे शवयोरिव संगमः॥ २९॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

दोहा—

नारि समागम काम फल, दुहुनहिं चित इक होय ।
जो कहुँ होय विभिन्नता, शवसगम सम जोय ॥ २९ ॥

समागम के समय स्त्री-पुरुष का एक चित्त हो जाना ही काम का फल है, यदि समागम में दोनों का एक चित्त न हो, तो वह मृतक के समागम के समान है।

प्रणयमधुराः प्रेमोद्गाढा रसादलसास्तथा
भणितमधुरा मुग्धप्रायाः प्रकाशितसंमदाः ।
प्रकृतिसुभगा विश्रम्भार्हाः स्मरोद्यदायिनो
रहसि किमपि स्वैरालापा हरन्ति मृगीदृशाम् ॥३०॥

दोहा—

प्रणय मधुर आलस भरे, सरस सनेह समेत ।
मृगनैनिन के ये वचन, हरे चित्तकों लेत ॥३०॥

मृगनयनी स्त्रियों के प्रणय प्रीति से मधुर प्रेमरसपूर्ण शृंगार रस से आलस्ययुवत सुनने में सुन्दर, अव्यक्त आनन्द प्रकाश करने वाले, स्वभाव ही से सुन्दर विश्वास योग्य, और कामदेव को उत्पन्न करने वाले वाक्य एकान्त में मन को हर लेते हैं ॥३०॥

आवासः क्रियतां गांगे पापवारिणि वारिणि ।
स्तनमध्ये तरुण्या वा मनोहारिणि हारिणि । ३१॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

दोहा—

वास कीजिए गंग तट, पाप निवारत वारि।
कै कामिनि कुचयुगल कौ, सेवन करहु बिचारि ॥३१॥

पाप हरने वाली गंगा के तट पर वास करना उचित है अथवा मनोहर हारयुक्त तरुणी स्त्री के स्तनों के मध्य में वास करे ॥३१॥

प्रियपुरतो युवतीनां तावत्पदमातनोतु हृदि मानः
भवति न यावच्चन्दनतरुसुरभि निर्मलः पवनः ॥३२॥

दोहा—

तबही लौ मन मान यह, तबही लौं भ्रूभंग।
जौ लौं चन्दन से मिल्यौ, पवन न परसत अंग ॥३२॥

मानिनी स्त्रियों के हृदय में मान तभी तक ठहरता है जब तक कि चन्दन की सुगन्धि से पूर्ण मलयाचल की वायु नहीं चलती है ॥३२॥

अथ ऋतु वर्णनम्

परिमलभृतो वातः शाखा नवांकुरकोटयो
मधुरविरतोत्कण्ठा वाचः प्रियाः पिकपक्षिणाम्।
विरलसुरतस्वेदोद्गारा वधूवदनेन्दवः
प्रसरति मधौ रात्र्यां जातो न कस्य गुणोदयः ॥३३॥

छप्पय—

चलैं सुगन्धित पवन फूल चहुँ दिश में फूले।
बोलत पिक मृदु वचन कामशर उर में शूले।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

मुकुलित मंजरि आम करै उत्कण्ठा भारी।
रतिश्रम स्वेदित वदनचन्द्र सम अद्भुत नारी।
यह केहि पदार्थ के गुणन को उदय करत नहि जगत महँ।
यहि ऋतु वसन्त की है निशा मंगलदायक सकल कहँ॥

सुगन्धियुक्त पवन चल रहा है, वृक्षों की शाखाओं में नये अंकुर निकल रहे हैं, कोकिल आदि पक्षियों की उत्कण्ठा भरी वाणी अत्यन्त मधुर मालूम होती है, और स्त्रियों के मुखचन्द्र रतिश्रम से निकले हुए प्रस्वेदों के कणों से शोभित हो रहे हैं, ऐसी वसन्त ऋतु की रात्रि में किस पदार्थ के गुणों का उदय नहीं होता ॥३३॥

मधुरयं मधुरैरपि कोकिला-
कलकलैर्मलयस्य च वायुभिः।
विरहिणः प्रणिहन्ति शरीरिणो
विपदि हन्त सुधापि विषायते ।३४॥

दोहा—

ऋतु वसन्त कोकिल कुहुक, त्योंही पवन अनूप।
विरह विपति के परत ही, सुधा होय विष रूप॥३४॥

यह वसन्त ऋतु कोकिलों के मधुर-मधुर शब्दों से और मलयाचल के वायु से विरही पुरुषों का वध करता है, इससे सिद्ध होता है कि विपत्तिकाल में अमृत भी विष हो जाता है ॥३४॥

आवासः किलकिंचिदेव दयिताः पार्श्वे विलासालसः
कर्णौ कोकिलकाकलीकलरवः स्मेरो लतामण्डपः।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

गोष्ठी सत्कविभिः समं कतिपयैः सेव्याः सितांशो. कराः
केषाञ्चित्सुखयन्ति नेत्रहृदये चैत्रे विचित्राः क्षपाः ॥३५॥

दोहा—

कोकिल रव, फूली लता, चैत्र चाँदनी रैन।
प्रिया सहित निज महल में, सुकृती करत सुचैन ॥३५॥

विलास भोग से शिथिल होके स्त्री के पास रहना, कान से कोकिल के शब्दों की कलकलाहट सुनना, लताओं के मण्डपों का प्रफुल्लित होना, अच्छे कवि-जनों के संग गोष्ठी करना और चन्द्रमा की किरणों का सेवन करना, इतनी सुख की सामग्रियों से उपयुक्त चैत्र मास की विचित्र रात्रियाँ किसी सुकृती मनुष्य के हृदय और नेत्रों को ही आमोदित करती हैं ॥३५॥

पान्थस्त्रीविरहानलाहुतिकथामातन्वती मञ्जरी
माकन्देषु पिकांगनाभिरधुना सोत्कण्ठमालोक्यते।
अप्येते नवपाटलाः परिमलप्राग्भारपाटच्चरा
वान्ति क्लान्तिवितानतानवकृतः श्रीखण्डशैलानिलाः॥३६॥

छप्पय—

विरही जन मन ताप करन वन अंबा मौरे।
पिकहू पञ्चम टेर हेर विहरी किय बौरे।
भोंर रहे भन्नाय पुहुप पांडल के महकत।
प्रफुलित भये पलास दशौं दिशि दौ सी दहकत।
मलयागिरिवासी पवनहू काम-अग्नि प्रज्वल करत।
विन कन्त बसन्त असन्त ज्यों, घेर रह्यो यह नहिं टरत ॥३६॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

इस वसन्त ऋतु में पथिकों को विरहिणी स्त्रियों की विरहाग्नि में आहुति देने वाली आम की मंजरी कोकिला बड़ी अभिलाषा से देखती हैं और नवीन पाटल के पुष्पों की सुगन्धि को चुराने वाले और खेद को घटाने वाले मलयाचल के वायु गमन करते हैं ॥३६॥

सहकारकुसुमकेसरनिकरभरामोदमूर्च्छितदिगन्ते ।
मधुरमधुविधुरमधुपे मधौ भवेत्कस्य नोत्कण्ठा ॥३७॥

सोरठा—

फूले चहुँ दिशि आम, भई सुगन्धित ठौर सब ।
मधु मधुपी अलिग्राम, मत्त भये झूमत फिरैं ॥३७॥

जिसमें आमके बौरों की केसर की सुगन्धि से दिशाएँ व्याप्त हो रही हैं, और मधुर मकरन्द का पान कर भ्रमर उन्मत्त हो रहे हैं, ऐसे ऋतुराज वसन्त में किसके मन में उत्कण्ठा नहीं होती ॥३७॥

अथ ग्रीष्मवर्णनम्

अच्छार्द्रचन्दनरसार्द्रकरा मृगाक्ष्यो
धारागृहाणि कुसुमानि च कौमुदी च ।
मन्दो मरुत्सुमनसः शुचि हर्म्यपृष्ठं
ग्रीष्मे मदं च मदनं च विवर्द्धयन्ति ॥३८॥

छप्पय—

मृगनैनी के हाथ अरगजा चन्दन लावत ।
छुटत फुहारे देख पुष्प-शय्या विरमावत ।
चारु चांदनी चन्द मन्द मारुत को ऐवौ ।
बाजत बीन प्रवीण संग गायन कौ गैवौ ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

चांदनि उजरे महल की निरखत चित गति हित ढरत ।
पुरुषनकों ग्रीषम विषम में ये मद मदनहि विस्तरत ॥३८॥

अति स्वच्छ चन्दन जिनके हाथों में लग रहा है, ऐसी स्त्रियाँ तथा फुहारे युक्त घर, सुगन्धित पुष्प, विकसित चाँदनी, मन्द मन्द पवन और महल की स्वच्छता ये सब ग्रीष्म ऋतु में मद और मदन को बढ़ाते हैं ॥३८॥

स्रजो हृद्यामोदा व्यजनपवनश्चन्द्रकिरणाः
परागः कासारो मलयजरजः सीधु विषदम् ।
शुचिः सौधोत्संगः प्रतनु वसनं पंकजदृशो
निदाघे तूर्णं तत्सुखमुपलभन्ते सुकृतिनः ॥३९॥

दोहा—

पुष्पमाल पंखा-पवन, चन्दन चन्द सुनारि ।
बैठ चांदनी जललहर, जेठ मास पटधारि ॥३९॥

मनोहर सुगन्धियुक्त माला, पंखे की वायु, चन्द्रमा की चाँदनी, पुष्पों का पराग, सरोवर, चन्दन की रज, उत्तम मद्य, बड़े महल की उत्तम स्वच्छ छत, महीनवस्त्र और कमलनयनी सुन्दर स्त्री इत्यादि उत्तमोत्तम पदार्थों से पुण्यवान् पुरुष ग्रीष्मऋतु में सुख उठाते हैं ॥३९॥

सुधाशुभ्रं धाम स्फुरदमलरश्मिः शशधरः
प्रियावक्त्राम्भोजं मलयजरजश्चातिसुरभि ।
स्रजो हृद्यामोदास्तदिदमखिलं रागिणि जने ।
करोत्यन्तः क्षोभं न तु विषयसंसर्गविमुखे ॥४०॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

दोहा—

शशिवदनी अरु शरद शशि, चन्दन पुष्प सुगन्ध ।
ये रसिकन के चित हरत, सन्तनके चितबन्ध ॥४०॥

चूने से पुता हुआ उज्वल गृह, निर्मल चाँदनी युक्त चन्द्रमा, प्यारी का मुख-कमल, सुगन्धित चन्दन, अत्यन्त सुगन्धित पुष्पों की माला, ये सब वस्तु अनुरागी पुरुषों के हृदय में अत्यन्त खेद करते हैं, परन्तु जो विषय के संसर्ग से विमुख हैं, उनके हृदय में क्षोभ नहीं करते ॥४०॥

अथ वर्षावर्णनम्

तरुणी वैषा दीपितकामा विकसज्जातीपुष्पसुगन्धिः ।
उन्नतपीनपयोधरभारा प्रावृट् कुरुते कस्य न हर्षम् ॥४१॥

दोहा—

पीन पयोधर कों धरत, प्रगट धरत हैं काम ।
पावस अरु प्यारी निरख, हर्षित होत तमाम ॥४१॥

तरुणी के वेष वाली, कामदेव का उदय करने वाली, खिले हुए जाती पुष्पों की सुगन्धि को धारण करने वाली और उन्नत पुष्ट पयोधरों के भार से युक्त यह वर्षा ऋतु किसके हृदय में हर्ष नहीं उत्पन्न करती है । यहाँ पर श्लेष है, जितने विशेषण प्रावृट् के हैं, वे ही सब तरुणी में भी घटेंगे, और उन सबके भिन्न अर्थ होंगे । तथा जाती जुही, लता और जावित्री को तथा पयोधर मेघ और स्तन से कहते हैं ॥४१॥

वियदुपचितमेघं भूमयः कन्दलिन्यो
नवकुटजकदम्बामोदिनो गन्धवाहाः ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

शिखिकुलकलकेकारावरम्या वानान्ताः
सुखिनमसुखिनं वा सर्वमुत्कण्ठयन्ति ॥४२॥

दोहा—

अम्बर धन अवनी हरित, कुटज कदम्ब सुगन्ध ।
मोर शोर रमणीक वन, सब कौं सुख सम्बंध ॥४२॥

मेघों से आच्छादित आकाश, नवीन-नवीन अंकुरों से पूर्ण पृथ्वी, नवीन कुटज और कदम्ब के पुष्पों से सुगन्धित वायु और मयूरों के झुण्डों की सुन्दर वाणी से रमणीय वन के प्रान्त, ये सब पदार्थ वर्षा ऋतु में सुखी और दुःखी दोनों प्रकार के पुरुषों को उत्कण्ठित करते हैं ॥४२॥

उपरि घनं घनपटलं तिर्यग्गिरयोऽपि नर्तितमयूराः
वसुधा कन्दलधवला तुष्टि-पथिकः क्व यातु संत्रस्तः ॥४३॥

दोहा—

घटा घोर चढ़ मोर गिरि, शोक हरित सब भूमि ।
विरही व्याकुल पथिक को, कहाँ तोष लखि घूमि ॥ ४३ ॥

ऊपर घनघोर घटा छा रही है, दाहिने बायें पर्वतों पर मयूर नाच रहे हैं और नीचे भूमि नवीन अंकुरों से हरी-भरी हो रही है, ऐसे समय में जब चारों ओर ही कामोद्दीपन करने वाले पदार्थ विद्यमान हैं, तो विरह से व्याकुल पथिक को कैसे सन्तोष आये ।

इतो विद्युद्वल्लीविलसितमितः केतकितरोः
स्फुरद्गन्धः प्रोद्यज्जलदनिनदस्फूर्जितमितः ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

इतः केकिक्रीडाकलकलरवः पक्ष्मलदृशां
कथं यास्यन्त्येते विरहदिवसः सम्भृतरसाः ॥४४॥

दोहा—

दमकत दामिनि मेघइत, केतकि पुष्प विकास ।
मोर शोर निशि दिन करत, विरही-जन मन त्रास ॥ ४४ ॥

एक ओर विद्युत छटा का विलास, दूसरी ओर केतकी के पुष्पों की उत्कृष्ट सुगन्धि और एक ओर मेघ की गर्जना और दूसरी ओर मोरों का शोर ये सब जहाँ एकत्र हैं, ऐसे ये रस-भरे दिन विरहिणी स्त्रियाँ कैसे व्यतीत करेंगीं ।

असूचीसंसारे तमसि नभसि प्रौढजलद-
ध्वनिप्राये तस्मिन् पतति दृषदां नीरनिचये ।
इदं सौदामिन्या कनककमनीयं विलसितं
मुदं च ग्लानिं च प्रथयति पथिष्वेव सुदृशाम् ॥४५॥

दोहा—

महा अंध तम नभ जलद, दामिनि दमक दुरात ।
हर्ष शोक दोऊ करत, तिय कौं पिय ढिग जात ॥ ४५ ॥

जिसमें कोई पदार्थ नहीं देख सकता ऐसे गाढ़ अन्धकार युक्त श्रावण मास में बड़े-बड़े मेघों की गर्जना और पत्थर सहित जलवृष्टि तथा सुवर्ण के समान सुन्दर बिजली का बार-बार चमकना स्त्रियों को मार्ग में ही सुख और दुखः दोनों करते हैं ।

आसारेण न हर्म्यतः प्रियतमैर्यातुं बहिः शक्यते
शीतोत्कम्पनिमित्तमायतदृशा गाढं समालिंग्यते ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

जाताः शीतलशीकराश्च मरुतो वान्त्यन्तखेदच्छिदो
धन्यानां बत दुर्दिनं सुदिनतां याति प्रियासंगमे ॥४६॥

छप्पय—

प्राविट् वर्षत मेह चढ़्यो दिन शीत अधिकतर ।
वाहर नहिं करि सकत नेह सों पग कोऊ नर ॥
कम्प होत जब गात तबहिं प्यारी सँग सोवत ।
उठत अनंग तरंग अंग में अंग समोवत ॥
रति खेद स्वेद छेदन करत जाल–रंध्र आवत पवन ।
इहि विधि दुर्दिवसहु मोद-प्रद होवहिं तिय सँग वसि भवन ॥४६॥

वर्षा की झड़ी में दिन निकल आने पर भी पुरुष ग्रह से बाहर नहीं निकल सकते हैं और बड़ा जाड़ा लगता है, देह काँपती है, इसी से स्त्रियाँ उनको गाढ़ आलिंगन करती हैं तथा शीतल जल के कणों से पूर्ण मैथुन के अन्त में श्रम हरने वाला वायु वहता है। अहो ऐसे पुण्यवान् पुरुषों के बुरे दिन भी प्रिया के संग में अच्छे दिन हो जाते हैं।

॥ अथ शरद्वर्णनम् ॥

अर्द्धं नीत्वा निशायाः सरभससुरतायासखिन्नश्लथांगः
प्रोद्भूतासह्यतृष्णो मधुमदनिरतो हर्म्यपृष्ठे विविक्ते ।
सम्भोगक्लान्तकान्ताशिथिलभुजलतावर्जितं कर्करीतो
ज्योत्स्नाभिन्नाच्छधारं पिबति न सलिलं शारदं मन्दभाग्यः
॥४७॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

छप्पय —

छके मदन की छाक मुदित मदिरा के छाके ।
करत सुरत रण रंग जंग कर कछु इक थाके ।
पौढ़ रहे लिपटाय अंग अंगन में उरझे ।
बहुत लगी जब प्यास तबहि चित चाहत सुरझे ।
उठ पियत रात आधी गये, सीतल जल या शरद को ।
नर पुण्यवन्त फल लेत हैं निज सुकृतहि की फरद को ।।४७।।

कोई कामी पुरुष जिसके अंग अर्द्ध रात्रि पर्यन्त मैथुन करने से शिथिल हो गये है, जिसको तृष्णा अत्यन्त से लग रही है और जो मद में मत्त हो रहा है, यदि उस समय संभोग के श्रम से वह एकान्त महल की छत पर थकी हुई स्त्री की भुजाओं द्वारा दिये हुए चाँदनी के समान स्वच्छ शीतल जल को झारी से नहीं पीता है तो वह पुरुष अवश्य मन्द-भाग्य है ।

॥ अथ हेमन्तवर्णनम् ॥

हेमन्ते दधिदुग्धसर्पिरशना मञ्जिष्ठवासोभृतः ।
काश्मीरद्रवसान्द्रदिग्धवपुषः खिन्ना विचित्रै रतैः ।
पीनोरःस्थलकामिनीजनकृताश्लेषा गृहाभ्यन्तरे
ताम्बूलीदलपूगपूरितमुखा धन्याः सुखं शेरते ।।४८।।

सोरठा—

दही दूध घृतपान, वसन मजीठहि रंग के ।
आलिंगन रतिदान, केशर चर्चि हिमन्त में ।।४८।।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

हेमन्त ऋतु में जो दही दुग्ध और घी का भोजन करते हैं, मजीठ के रंगे हुए वस्त्र पहनते हैं, केशर और कस्तूरी का सघन लेप अपने सब शरीर में करते हैं, पुष्ट स्तन वाली स्त्री जिनका आलिंगन करती है और जो पान और सुपारियों से अपने मुख को शोभित करते हैं और सुखपूर्वक अपने गृह में शयन करते हैं, वे ही धन्य हैं।

॥ अथ शिशिरवर्णनम् ॥

चुम्बन्तो गंगभित्तीरलकवति मुखे सीत्कृतान्यादधाना
वक्षःसूत्कञ्चुकेषु स्तनभरपुलकोद्भेदमापादयन्तः।
ऊरूनाकम्पयन्तः पृथुजघनतटात्स्रंसयन्तोऽशुकानि
व्यक्तं कान्ताजनानां विटचरितकृतः शैशिरा वान्ति वाताः
॥४९॥

छप्पय—

चुम्बन करत कपोल मुखहि सीत्कार करावत।
हृदय माँहि घँसजात कुचन पर रोम बरावत।
जंघन को थहरात बसनहू दूर करत झुक।
लग्यौ रहत सँग माहिं द्वार कों रोंक रह्यौ ढुक।
यह शिशर पवन विटरूप धर गलिन गलिन भटकत फिरत।
मिल रहे नारि-नर घरन में याकी भट भेरत भिरत ॥ ४९ ॥

कामी पुरुष भोगकाल में जो आचरण करते हैं, वही शिशिर ऋतु का पवन भी करता है। स्त्रियों के केशयुक्त कपोलों का चुम्बन करता है. शीत के कारण सीत्कार शब्द कराता है, कंचुकी रहित स्तनों को रोमांचित करता है, जंघाओं को कँपाता है और पुष्ट जघनों से वस्त्रों

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

को उड़ाता है, इस प्रकार कामी पुरुष के समान आचरण वाला शिशिर ऋतु का पवन बह रहा है।

केशान कलयन्दृशो मुकुल यन्वासो बलादाक्षि
पन्ना तन्वन्पुलकोद्गमं प्रकटयन्ना लिंग्य कम्पञ्छनैः।
वारंवारमुदारसीत्कृतकृतोदन्तच्छदान्पीडयन्
प्रायः शैशिर एष सम्प्रति मरुत्कान्तासु कान्तायते ॥५०॥

छप्पय—

विलुलित करत सुकेश नयन हूँ छिनछिन मूँदत।
वसनन ऐंचे लेत देह रोमाञ्चन रूँदत।
करत हृदय कों कम्प कहत मुखहू सों सी-सी।
पीड़ा करतहि ओठ वयारहु मार सिरी सी।
यह शीतकाल में जानिये, अद्भुत गति धारत पवन।
निशिद्योस दुरे दुवके रहौ निज नारी सँग निज भवन ॥५०॥

बालों को बिखेरता, आँखों को किञ्चित् २ मूंदता, साड़ी को बलपूर्वक उड़ाता हुआ देह को रोमांचित करता हुआ, धीरे-धीरे आलिंगन करके कम्पन प्रगट करता हुआ और बारम्बार सी-सी शब्द कराकर ओष्ठों को पीड़ित करता हुआ ये शिशिर ऋतु का पवन प्रायः स्त्रियों के विषय पति का सा आचरण करता है।

अथ विषयप्रशंसा

असाराः सन्त्वेते विरतिविरसायासविषया
जुगुप्सन्तां यद्वा ननु सकलदोषास्पदमिति।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

तयाऽप्यन्तस्तत्त्वे प्रणिहितधियामप्यतिबल-
स्तदीयोऽनाख्येयः स्फुरति हृदये कोऽपि महिमा ॥५१॥

छप्पय—

यदपि भोग निस्सार विरति में विघ्न करैं नित ।
सब दोषन की खान जीव कौ साधैं अनहित ।
करैं निलज मतिहीन ज्ञान कूँ धोय बहावैं ।
सर्वस देइ नसाय बुरौ जग बीच कहावैं ।
यदि निन्दा याकी करै कोउ, तद्यपि है महिमा बहुत ।
हिय बसत ब्रह्मज्ञानीहुँ के तहँ पामर की गिनतीहि कुत ॥५१॥

यह सब भोग विषय असार और वैराग्य में विरस करने वाले हैं। यदि इन विषयों को सम्पूर्ण दोषों का घर समझ कर कोई मनुष्य इनको निन्दा करे तो भी इनकी महिमा अत्यन्त बलवान् है, वर्णन नहीं हो सकता, क्योंकि ब्रह्म के विचारों में लीन तत्ववेत्ताओं के हृदय में भी ये प्रकाशित होते हैं ॥

भवन्तो वेदान्तप्रणिहितधियामाप्तगुरवो
विदग्धालापानां वयमपि कवीनामनुचराः ।
तथाप्येतद् भूमौ नहि परहितात्पुण्यमधिकं
न चास्मिन्संसारे कुवलयदृशोरम्यमपरम् ॥५२॥

छप्पय—

पढे वेद-वेदान्त भये विद्योदधि पारा ।
तिनहूँ के तुम गुरू बुद्धि बल पाय अपारा ॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

हम कछु जानत नाहिं पढ़े नहिं विद्या भारी।
रहे कविन के दास, कहैं यें बात बिचारी।
यहि जग बिच परउपकार सम अपर कछू है पुण्य नहिं।
अरु पंकज-नयनी त्रियन सों वस्तु अधिक नहिं सुखद कहिं ॥५२॥

तुम वेदान्तवेत्ताओं के मान्य गुरु हो, और हम भी उत्तम काव्य रचयिता कवियों के दास हैं, तथापि मैं यह जानता हूँ कि इस संसार में परोपकार करने से अधिक पुण्य और कुछ नहीं है और कमल-नयनी स्त्रियों से अधिक सुन्दर दूसरी कोई वस्तु नहीं है ॥

किमिह बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यैः प्रलापै-
र्द्वयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनीयम्।
अभिनवमदलीलालालसं सुन्दरीणां
स्तनभरपरिखिन्नं यौवनं वा वनं वा ॥५३॥

दोहा—
सुनी औरहू बात पै, मुख्य बात ये दोय।
कै तिय जोवन में रमै, कै वनवासी होय ॥५३॥

इस संसार में युक्तिशून्य वृथा प्रलापों से क्या प्रयोजन है, यहाँ तो पुरुषों को दो ही वस्तु सर्वदा सेवने योग्य हैं; नवीन मद की लीलाभिलाषी स्तनों के भार से स्वेदयुक्त सुन्दरी स्त्रियों का यौवन अथवा वन ॥

अथ दुर्विरक्तवर्णनम्

सत्यं जना वच्मि न पक्षपाताल्लोकेषु सर्वेषु च तथ्यमेतत्।
नान्यन्मनोहारि नितम्बिनीभ्यो दुःखैकहेतुर्न च कश्चिदन्यः ॥५४

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

दोहा—

कहहिं सत्य तजि पक्ष हम, लोक विमोहन नारि ।
अरु यासों दुःखद अपर, नहिं कछु लेहु बिचारि ।।५४।।

हे मनुष्यो ! यह हम सत्य कहते हैं, इसमें कुछ भी पक्षपात नहीं करते कि इस संसार में स्त्रियों से बढ़ कर न कोई मन को हरने वाली वस्तु है और न कोई दुःखदाई वस्तु है ।।

तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मलविवेकदीपकः ।
यावदेव न कुरंगचक्षुषां ताड्यते चपललोचनाञ्चलैः ।।५५।।

दोहा—

दीपक जरत विवेक को, तौलौं या चित मांहि ।
जौलों तार कटाक्ष पट, पवनसु परसत नाहि ।।५५।।

विवेकियों के हृदय में यह विवेक-रूपा निर्मल दीपक तभी तक प्रकाशित रहता है जब तक कि मृगनयनी स्त्रियों के चंचल नेत्ररूपी अञ्चल से नहीं बुझाया जाता ।।

वचसि भवति संगत्यागमुद्दिश्य वार्ता
श्रुतिमुखरमुखानां केवलं पण्डितानाम् ।
जघनमरुणरत्नग्रन्थिकाञ्चीकलापं
कुवलयनयनानां को विहातुं समर्थः ।।५६।।

कुण्डलिया—

पंडितजन जब कहत हैं तिय तजिबे की बात ।
करत वृथा बकबाद वह तजी नेंक नहिं जात ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

तजी नेंक नहिं जात गात छबि कनक वरन वर।
कमल पत्रसम नैन वैन बोलत अमृत झर।
सोहत मुख मृदु हास अंग आभूषण मंडित।
ऐसी तिय को तजै कौन सो है वह पंडित ॥५६॥

पण्डितों की बात स्त्रियों के सङ्ग त्यागने की केवल कथनमात्र ही है, नहीं तो लालरत्न जटित कटि मेखला पहिने हुई स्त्रियों के जघन स्थल को त्यागने में कौन समर्थ है ॥

स्वपरप्रतारकोऽसौ निन्दति योऽलीकपण्डितो युवतीः।
यस्मात्तपसोऽपि फलं स्वर्गस्तस्यापि फलं तथाप्सरसः ॥५७॥

दोहा—

नारिन की निन्दा करत, ते पण्डित मतिहीन।
स्वर्ग गये तिनकों सुने, सदा अप्सरा लीन ॥५७॥

जो मनुष्य स्त्रियों की निन्दा करता है, वह झूठा पण्डित है, आप तो ठगा ही गया औरों को भी ठगाता है; क्योंकि तपस्या का फल स्वर्ग और स्वर्ग प्राप्ति का फल अप्सराओं का भोग है ॥

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः
केचित्प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षाः।
किं तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य
कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः ॥५८॥

छप्पय—

हाथी मारन हार होत ऐसेहू सूरे।
मृगपति वध कर सके, बकें नहिं नेंकहु पूरे।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

बड़े-बड़े बलवन्त वीर सब तिनके आगे ।
महाबली ये काम जाहि देखत सब भागे ।
अभिमान भरे या मदन को, मान भार मेटे अवधि ।
नर धरम धुरंधर वीर वै बिरले या संसार मधि ॥५८॥

मत्त हाथी के मस्तक को विदारने वाले शूर इस पृथ्वी पर अनेक हैं, और प्रचण्ड सिंह के मारने वाले दक्ष योद्धा भी कितने हा हैं। परन्तु मैं बलवानों के आगे हठपूर्वक कहता हूँ कि कामदेव के मद का नाश करने वाला तो कोई बिरला हा मनुष्य होता है।

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति पुरुषस्तावदेवेन्द्रियाणां
लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालम्बते तावदेव ।
भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथगता नीलपक्ष्माण एते
यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषो दृष्टिबाणाः पतन्ति ॥५९॥

दोहा—

इन्द्रीमद लज्जाविनय, तौलौं सब शुभ कर्म्म ।
जौलौं नारी नयन शर, छेदत नाहीं मर्म्म ॥५९॥

मनुष्य सन्मार्ग पर तभी तक रहता है, इन्द्रियों को भी उसी समय तक वश में रख सकता है, और लज्जा और विनय भी तभी तक रहते हैं, जब तक कि नील पलक रूपी पंख धारण किये भृकुटि रूपी धनुष से कान तक खेंच कर चलाये हुए, धैर्य को चुराने वाले युवतियों के नेत्र-बाण हृदय में प्रवेश करते नहीं है ॥

उन्मत्तप्रेमसंरम्भादारभन्ते यदंगनाः ।
तत्र प्रत्यूहमाधातुं ब्रह्मापि खलु कातरः ॥६०॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

रामनिरंजन पाण्डेय

दोहा—

महामत्त या प्रेम कौ, जब तिय करत उदोत ।
तब वाके छल-बल निरखि, विधिहू कायर होत ॥६०॥

प्रेम की उमंग से उन्मत्त हो कर स्त्रीजन जिस कार्य का आरम्भ कर देती हैं उस कार्य को रोकने की ब्रह्मा में भी सामर्थ्य नहीं है।

तावन्महत्त्वं पाण्डित्यं कुलीनत्वं विवेकिता ।
यावज्ज्वलति नांगेषु हंतः पञ्चेषुपावकः ॥६१॥

दोहा—

बुद्धि विवेक कुलीनता, तौलों हीं मन माँहि ।
कामबाण की अग्नि तन, जौलों धधकत नाहिं ॥६१॥

बड़ाई, बुद्धिमानी, विवेक और कुलीनत्व ये मनुष्य में तभी तक स्थिर रहते हैं, जब तक कि उसके शरीर में कामाग्नि नहीं प्रदीप्त होती ॥

शास्त्रज्ञोऽपि प्रथितविनयोऽप्यात्मबोधोऽपि बाढ
संसारेऽस्मिन्भवति विरलो भाजनं सद्गतीनाम् ।
येनैतस्मिन्निरयनगरद्वारमुद्घाटयन्ती
वामाक्षीणां भवति कुटिल भ्रूलता कुञ्चिकेव ॥६२॥

छप्पय—

सब ग्रन्थन के ज्ञानवान अरु नीतिवान नर ।
तिन में कोऊ होत मुक्त मारग में तत्पर ।
सबकों देत बहाय वंक-नयनी यह नारी ।
जाकी वांकी भौंह नचत अति ही अनियारी ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

यह कूँची करम-कपाट की खोलन कौं ऊकत फ़िरत।
जिनके न लगत मन दृगन में, ते भवसागर को तरत ।।६२।।

शास्त्र के जानने वाले, प्रसिद्ध विनयवान् और आत्मज्ञानी तो बहुत होते हैं, परन्तु उनमें से कोई विरला ही इस संसार में उत्तम गति का भागी होता है। कारण यह है कि यहाँ सुन्दर नेत्र वाली स्त्रियों की टेढ़ी भ्रू-लता नरक-नगर के द्वार को घूमती हुई कुंजी के समान खोलती है ।।

कृशः काणः खंजः श्रवणरहितः पुच्छविकलो
व्रणी पूयक्लिन्नः कृमिकुलशतैरावृततनुः ।
क्षुधाक्षामो जीर्णः पिठरककपालार्पितगलः
शुनीमन्वेति श्वा हतमपि निहन्त्येव मदनः ।।६३।।

छप्पय—

दुबरौ, कानौ, हीन-श्रवण, विन पूंछ नवाये ।
बूढ़ौ विकल शरीर, वार विन, छार लगाये ।।
झरत शीसतें राध, रुधिर कृमि डारत डोलत।
क्षुधा क्षीण, अति दीन गले घट कण्ठ कलोलत ।
यह दशा श्वान पाई तऊ, कुतियन से उरझत गिरत ।
देखौ अनीति या मदन की, मृतकन को मारत फिरत ।।६३।।

जो दुबला, काना, लँगडा, कनकटा और दुमकटा है, जिसके शरीर में घाव हो रहे हैं, जिनमें से राध बह रही है, और सहस्रों कीड़े किलबिला रहे हैं, तथा जो भूख से पीड़ित हैं और हांडी का मुख जिसके गले में अटक रहा है, ऐसा कुत्ता भी कुत्ती के पीछे दौड़ता है। बड़े खेद की बात है कि यह कामदेव मरे हुओं को भी मारता है ।।६३।।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

स्त्रीमुद्रां मकरध्वजस्य परमां सर्वार्थसम्पत्करीं
ये मूढाः प्रविहाय यान्ति कुधियो स्वर्गादि लोभेच्छया
ते तेनैवनिहत्य निर्दयतरं नग्नीकृताः मुण्डिताः
केचित्पंचशिखीकृताश्च जटिलाः कापालिकाश्चापरे ॥६४॥

कुण्डलिया—

कामिनि मुद्रा काम की सकल अर्थ को देत ।
मूरख याकों तजत है झूँठे फल के हेत ।
झूठे फल के हेत तजत तिनहीं को डांडे ।
गहि गहि मूँडे मूँड बसन बिन कर कर छांडे ।
भगवा करि करि वेष जटिल ह्वै जागत जामिनि ।
भीख माँग के खात कहत हम छोड़ी कामिनि ॥६४॥

यह स्त्रियां सम्पूर्ण अर्थों को देने वाली कामदेव की मुद्रा हैं; जो मूढ कुबुद्धि मनुष्य इनको त्याग कर स्वर्गादिक की इच्छा से विरक्त हो जाते हैं, उनको विरक्त मत समझो, किन्तु उनको कामदेव ने बड़ी निर्दयता के साथ दण्ड दिया है। जैसे राजा अनीति वालों को करता है; अर्थात् किसी को नंगा किया, किसी का सिर मुँडवाया, किसी के पाँच चोटी रखवाई, किसी को जटाधारी किया, और किसी के हाथ में ठीकड़ा दे कर भीख मँगवाई ॥६४॥

विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो वाताम्बुपर्णाशना-
स्तेऽपि स्त्रीमुखपंकजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गताः ।
शाल्यन्नं सघृतं पयोदधियुतं भुंजन्ति ये मानवा-
स्तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद्विन्ध्यस्तरेत्सागरम् ॥६५॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

छप्पय—

कौशिकादि मुनि भये वात पय पर्णाहारी ।
तेहू तिय मुख-कमल देख सब बुद्धि बिसारी ।
दधि घृत ओदन दूध मधुर पकवान मलाई ।
नित प्रति सेवन करें रहे बहु मोद बढ़ाई ।
बहु विधि ज्ञानीनर जगभए वै नहिं मन कर सके बस ।।
यदि होवहि तौ गिरिविंध्यजानु, उदधि मध्य उतराहि तस ।।६५।।

जब विश्वामित्र पाराशर इत्यादि बड़े-बड़े ऋषि भी जो वायु जल और पत्ते खा कर रहते थे, स्त्री के मुख कमल को देखते ही मोहित हो गये, तो फिर जो मनुष्य घी दूध दही सहित उत्तम अन्न खाते हैं उनकी इन्द्रियाँ कैसे वश में हो सकती हैं। यदि उनकी इन्द्रियाँ वश में हो जाएँ तो विन्ध्याचल पर्वत समुद्र पर तरने लगे; इन्द्रियों का वश में करना बड़ा कठिन कार्य है, यह भावार्थ है ।।६५।।

इति दुर्विरक्त प्रशंसा-समाप्ता ।

अथ स्त्रीत्यागप्रशंसा ।

संसारेऽस्मिन्नसारे कुनृपतिभुवनद्वारसेवाकलंक-
व्यासंगव्यस्तधैर्यं कथममलधियो मानसं संविदध्युः
यद्येताः प्रोद्यदिन्दुद्युतिनिचयभृतो न स्युरम्भोजनेत्राः
प्रेङ्खत्काञ्चीकलापाः स्तनभरविनमन्मध्यभागास्तरुण्यः ।।६६

छप्पय—

तौ असार संसार जान सन्तोष न तजते ।
भीर भारके भरे भूपको मूल न भजते ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

बुद्धि बिवेक निधान मान अपने नहिं देते।
हुकुम विरानौ राख दुःख सम्पद नहिं लेते।
जो यह नहिं होती शशि-मुखी मृग नैनी केहरि-कटी।
छबि जटी छटा निकसी छटी रस लपटी छूटी लटी ॥६६॥

उदित चन्द्रमा की-सी कान्ति धारण करने वाली, शब्दायमान कटि मेखला धरिणी, और स्तनों के भार से जिनकी कमर झुक गयी है, ऐसी कमल नयनी युवती स्त्री यदि न होती तो इस असार संसार में निर्मल बुद्धि वाले मनुष्य दुष्ट राजाओं के द्वारों की सेवा में नाना प्रकार के कलंकों से चित्त को अधीर क्यों करते। अर्थात् यदि यह स्त्रियाँ न होती तों पण्डितजन राज-द्वार की सेवा कभी न करते यह भावार्थ है।

सिद्धाध्यासितकन्दरे हरवृषस्कन्धावगाढद्रुमे
गंगाधौतशिलातले हिमवतः स्थाने स्थिते श्रेयसि।
कः कुर्वीत शिरः प्रणाममलिनं म्लानं मनस्वी जनो
यद्वित्रस्तकुरंगशावनयना न स्युः स्मरास्त्रं स्त्रियः ॥६७॥

कुण्डलिया—

अभय हरिण-शावक-नयन, कामबाण-सम नार।
जो घर में होती नहीं, सहजहिं होतौ पार।
सहजहिं होतौ पार बैठ गिरि-गुहा सिद्ध बन।
जहाँ तरुन सों अंग खुजात फिरे हर-वाहन।
स्वच्छ फटिक हिम-शैल तले जहँ वहै गंग-पय।
निशिदिन धरि हरि ध्यान चित्तकूँ राखहि निर्भय ॥६७॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

यदि भयशून्य, मृगनयनी, काम के अस्त्र रूप, यह स्त्रियाँ न होतीं तो कौन मनस्वी पुरुष सिद्धगण जिसकी कन्दरा में बैठे हैं, महादेव जी का वृषभ जहाँ वृक्षों से कंधा रगड़ता है, और जहाँ के पाषाण गंगाजल से धोये जाते हैं, ऐसे पुण्य-धाम हिमालय पर्वत को त्याग कर औरों के सन्मुख मस्तक झुका अपने मन को मलिन करता ॥

संसार ! तव पर्यन्तपदवी न दवीयसी ।
अन्तरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥६८॥

सोरठा—

जौ नहिं होती नार, तौ तरिवौ जग में सुगम ।
यह लम्बी तरवार, मार लेत अध-बीच ही ॥६८॥

रे ससार यदि सुन्दर नेत्र वाली दुस्तरा स्त्रियाँ तेरे बीच में न होती तो तुझसे पार होना कठिन नहीं था ॥

इति-स्त्री परित्याग प्रकरण

अथ यौवनप्रशंसा ।

राजन् तृष्णाम्बुराशेर्नहि जगति गतः कश्चिदेवावसानं
को वार्थोऽर्थैः प्रभूतैः स्ववपुषि गलिते यौवने सानुरागे ।
गच्छामः सद्म तावद्विकसितनयनेन्दीवरालोकिनीनां
यावच्चाक्रम्य रूपं झटिति न जरया लुप्यते प्रेयसीनाम् ॥६९

कुण्डलिया—

नर-वर ! तृष्णा सिन्धु के पार न कोई जाय ।
कहा अर्थ संचय किये काल-सर्प वय खाय ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

कालसर्प वय खाय नेह अरु प्रेम नसावै।
कहा होय घर गये तवै कछु हाथ न आवै।
तासौं तबलों वेग भाग चलिये द्वारै घर।
कमल नयन तिय रूप जरा जबलौं नहिं नरवर ॥६९॥

हे राजन् ! इस तृष्णा रूपी समुद्र के पार कोई नहीं गया और जब हमारी अनुराग भरी युवाअवस्था देह में ही नष्ट हो गयी तब अधिक द्रव्योंपार्जन करने से हमको क्या प्रयोजन है, हम उससे पहिले ही प्रफुल्लित कमल समान नेत्रों वाली स्त्रियों के घर जाते हैं, जब तक कि वृद्धावस्था उसके रूप को जल्दी से न बिगाड़े ॥

रागस्यागारमेकं नरकशतमहादुःखसम्प्राप्तिहेतु-
र्मोहस्योत्पत्तिबीजं जलधरपटलं ज्ञानताराधिपस्य।
कन्दर्पस्यैकमित्रं प्रकटितविविधस्पष्टदोषप्रबन्धं
लोकेऽस्मिन्न ह्यनर्थं निजकुलदहनं यौवनादन्यदस्ति ॥७०॥

छप्पय—

इन्द्रिन कौ हित-धाम काम कौ मित्र महावर।
नरक दुःख कौ हेतु मोह कौ बीज मनोहर।
ज्ञान सुधाकर सीस सजल सावन कौ बादर।
नाना विधि बकवाद करन कौं बड़ौ बहादुर।
सब ही अध कौ है मूल यह, यौवन अकृतहि कौ कवच।
या विना और को कर सकै सुन्दर मुख पर श्याम कच ॥७०॥

अनुराग का एकमात्र गृह, सैकड़ों नरकों के दुःख प्राप्त होने का हेतु, मोह की उत्पत्ति का बीज, ज्ञानरूपी चन्द्रमा के ढकने को मेघरूप,

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

कामदेव का एकमात्र प्रिय मित्र, नाना प्रकार के दोषों को प्रकट करने वाला, और अपने कुल को दग्ध करने वाला जो यौवन है, इससे बढ़कर संसार में कोई दूसरा अनर्थ नहीं है।

श्रृंगारद्रुमनीरदे प्रचुरतः क्रीडारसस्रोतसि
प्रद्युम्नप्रियबान्धवे चतुरतामुक्ताफलोदन्वति।
तन्वीनेत्रचकोरपारणविधौ सौभाग्यलक्ष्मीनिधौ
धन्यः कोऽपि न विक्रियां कलयति प्राप्ते नवे यौवने ।।७१।।

छप्पय—

यह जोवन धन रूप सदा सींचत श्रृँगार तर।
क्रीड़ा-रस को सोत चतुरता रत्न देत कर।
नारी नयन चकोर चोप को चन्द्र विराजत।
कुसुमायुध को बन्धु सिन्धु शोभा को भ्राजत।
ऐसौ यह यौवन पायके जे नहिं धरत विकार मन।
ते धरम धुरंधर धीर मणि शूर शिरोमणि सन्तजन ।।७१।।

श्रृंगार रूपी वृक्षों का सींचने वाला मेघ, विस्तरित क्रीडा रस का प्रवाह, कामदेव का प्रियबन्धु, चतुरता रूपी मोतियों का समुद्र, स्त्रियों के नेत्र रूपी चकोर को पूर्णचन्द्र और सौभाग्य लक्ष्मी का भण्डार, जो यह नवयौवन है इसको पा कर जो पुरुष विकार को नहीं प्राप्त होता है वही धन्य है ।।७१।।

अथ कामिनीगर्हण प्रशंसा

कान्तेत्युत्पललोचनेति विपुलश्रोणीभरेत्युत्सुकः
पीनोत्तुंगपयोधरेति सुमुखाम्भोजेति सुभ्रूरिति।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

दृष्ट्वा माद्यति मोदतेऽभिरमते प्रस्तौति जानन्नपि
प्रत्यक्षाशुचिपुत्रिकां स्त्रियमहो मोहस्य दुश्चेष्टितम् ॥७२॥

कुण्डलिया—

कान्ता उत्पल-लोचना प्रिया कृशोदरि बाल।
घटस्तनी पंकजमुखी कामिनि अधर प्रवाल।
कामिनि अधर प्रवाल सुभ्रु कहिकहि के बोलें।
आनँद अधिक उछाह मत्तवन पण्डित डोलें।
अशुचि पूतरी नारी ताहि मन जानैं शान्ता।
महा नरक की खान मोह वस मानैं कान्ता ॥७२॥

विद्वान् मनुष्य भी प्रत्यक्ष अपवित्रता की पुतली रूपी स्त्री को देख उत्कण्ठित हो कर "यह स्त्री कैसी सुन्दर है, यह कमलनयनी है, इसके नितम्ब बहुत बड़े हैं, इसके स्तन बड़े स्थूल और दृढ़ हैं, इसका मुख-कमल बहुत सुन्दर, इसकी भौंहें अच्छी हैं" ऐसा कह कर मोहित हो जाता है, हर्ष को प्राप्त होता है, रमण करता है, और उनको स्तुति करता है, देखो। यह मोह की कैसी बुरी चेष्टा है ॥७२॥

दोहा—

स्मृता भवति तापाय दृष्टा चोन्मादवर्धिनी।
स्पृष्टा भवति मोहाय सा नाम दयिता कथम् ॥७३॥

सुधि आये सुधि-बुधि हरत, दरसत करत अचेत।
परसत मन मोहित करत, यह प्यारी किहि-हेत ॥७३॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

जो स्मरण मात्र से सन्ताप करती है, देखते ही उन्माद को बढ़ाती है और स्पर्श करते ही मोह उत्पन्न करती है, ऐसी स्त्री को प्रिया कैसे कह सकते हैं ॥७३॥

तावदेवामृतमयी यावल्लोचनगोचरा ।
चक्षुःपथादपगता विषादप्यतिरिच्यते ॥७४॥

दोहा—

जौं लौं सन्मुख नयन के, अबला अमृत रूप ।
दूर भये ते सहज ही, होत वही विष-कूप ॥७४॥

जब तक स्त्री नेत्रों के सम्मुख रहती है तभी तक वह अमृतमयी है, नेत्रों के सामने से हटते ही वह विष से भी अधिक हो जाती है ॥७४॥

नामृतं न विषं किंचिदेकां मुक्त्वा नितम्बिनीम् ।
सैवामृतलतारक्ता विरक्ता विषवल्लरी ॥७५॥

दोहा—

नहिं विष नहिं अमृत कहूँ, एक तिया तू जान ।
मिलवे में अमृत नदी, बिछुरे विष की खान ॥७५॥

स्त्री के अतिरिक्त इस संसार में न कोई अमृत है न कोई विष है, कारण कि यदि स्त्री प्रीति करे तो वही अमृत लता और यदि प्रीति को तोड़ दे वही अमृत लता विष की बेल हो जाती है ॥७५॥

आवर्तः संशयानामविनयभवनं पत्तनं साहसानां
दोषाणां सन्निधानं कपटशतमयं क्षेत्रमप्रत्ययानाम्

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

स्वर्गद्वारस्य विघ्नो नरकपुरमुखं सर्वमायाकरण्डं
स्त्रीयन्त्रं केन सृष्टं विषममृतमयं प्राणिनां मोहपाशः ॥७६॥

छप्पय—

परम भरम कौ भौंर, भवन है गूढ़ गरब कौ ।
अनुचित कृत्त कौ सिन्धु कोष है दोष अवर कौ ।
प्रगट कपट कौ कोट खेत अप्रीति करन कौ ।
सुरपुर कौ बटमार नरकपुर द्वार करन कौ ।
यह युवतियंत्र कौनैं रच्यौ महा अमृत विषसोंभर्यो ।
थिरचर नर किन्नर सुर असुर सबके गल बन्धन कर्यो ॥७६॥

संदेहों का भँवर, अविनय का घर, साहस का नगर, दोषों का पात्र सैकड़ों प्रकार के कपटों से भरा हुआ, अविश्वास की भूमि, स्वर्ग द्वार का विघ्नकारक, नरक का द्वार, सम्पूर्ण मायाओं का पिटारा, विष-रूप, अमृतमय और मनुष्यों का मोह के फंदे में फँसाने वाला यह स्त्री रूप यन्त्र किसने निर्माण किया है ॥७६॥

सत्यत्वे न शशांक एष वदनीभूतो न चेन्दीवर-
द्वन्द्वं लोचनतां गतं न कनकैरप्यंगयष्टिः कृता ।
किन्त्वेवं कविभिः प्रतारितमनस्तत्त्वं विजानन्नपि
त्वङ् मांसास्थिमयं वपुर्मृगदृशां मन्दो जनः सेवते ॥७७॥

कुण्डलिया—

नहि शशांक सम वदन तिय नील जलज सम नैन ।
अंग कनक सम हैं नहीं, कोकिल सम नहि वैन ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

कोकिल सम नहिं वैन झूँठ कवि उपमा दीनी।
जानत हैं सब भेद तऊ पट आंखिन कीन्हीं।
हाड़-चाम मय नार मन्दमति निशिदिन सेवहिं।
करें उपाय अनेक ग्लानि चित नेंक न देवहिं ॥७७॥

सच पूछो तो न चन्द्रमा स्त्री का मुख है, न कमल ही दोनों हैं नेत्र और न सुवर्ण ही उसका देह बना है, परन्तु कवियों द्वारा बहकाए हुए अन्ध अर्थात् विवेक-रहित मनुष्य इस बात को जानते हुए भी कमलनयन स्त्रियों के चर्म, अस्थि और मांसमय शरीर का सेवन करते हैं ॥७७॥

लीलावतीनां सहजा विलासास्त एव मूढस्य हृदि स्फुरन्ति।
रागो नलिन्या हि निसर्गसिद्धस्तत्र भ्रमत्येव मुधा षडङ्घ्रिः ॥७८॥

दोहा—

कामिनि विलसत सहज में, मूरुख मानत प्यार।
सहज सुगन्धित कुमुदिनी, भौंरा भ्रमत गँवार ॥ ७८ ॥

लीलावती स्त्रियों के जो विलास हैं वे स्वाभाविक है। वे मूर्ख मनुष्य के हृदय में प्रकाशित होते हैं अर्थात् मूर्ख ही उनको देख कर मुग्ध हो जाते हैं, देखो कमलिनी में ललाई स्वाभाविक ही है, परन्तु भ्रमर उस पर व्यर्थ ही आसक्त हो कर घूमता है अर्थात् वह यह समझता है कि इसकी जो यह ललाई है सो मेरे ही लिए है ॥७८॥

यदेतत्पूर्णेन्दुद्युतिहरमुदाराकृति वरं
मुखाब्जं तन्वङ्ग्याः किल वसति यत्राधरमधु।
इदं तावत्पाकद्रुमफलमिवातीव विरसं
व्यतीतेऽस्मिन्काले विषमिव भविष्यत्यसुखदम् ॥७९॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

दोहा—

अधर मधुर मधु सहित मुख, हुतो सबन शिरमौर।
सो अब बिगरे फलन सम, भयो और सों और ॥ ७९ ॥

पूर्णिमा के चन्द्र की छवि को हरने वाला सुन्दर आकारवान और श्रेष्ठ जो यह स्त्रियों का मुख कमल है इसमें अधरामृत रहता है, यह मुख मन्दार के फल के सदृश अज्ञात वा युवास्था में ही अच्छा लगता है, किन्तु वह काल व्यतीत होने पर अर्थात् ज्ञान अथवा वृद्धावस्था प्राप्त होने पर विष के समान दुःखदाई हो जाता है ॥७९॥

उन्मीलत्त्रिवलीतरंगनिलया प्रोत्तुंगपीनस्तन-
द्वन्द्वेनोद्यतचक्रवाकमिथुना वक्त्राम्बुजोद्भासिनी।
कान्ताकारधरा नदीयमभितः क्रूराशया नेष्यते
संसारार्णवमज्जनं यदि ततो दूरेण संत्यज्यतामम् ॥८०॥

छप्पय—

त्रिवली तरल तरंग लसत कुच चक्रवाक सम।
प्रफुलित आनन कंज नारि यह नदी मनोरम।
महा भयानक चाल चलत भवसागर सन्मुख।
हाथ धरत ही ऐंच जात जितकों अपनी रुख।
संसार सिन्धु चाहत तर्यो तौ तू यासों दूर रह।
जाको प्रवाह अति ही प्रबल नेक न्हात ही जात बह ॥ ८० ॥

शोभित उदर की त्रिवली ही तरंगों का समूह है, उत्तुंग और पुष्ट दोनों स्तन ही चक्रवाक के जोड़े हैं और मुख रूपी कमल से शोभायमान हैं ऐसी जो यह स्त्रीरूपी नदी है सो चारों ओर से क्रूराशय (नदी पक्ष में

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

कच्छप मकरादि युक्त औ स्त्री पक्ष में कठिनाशय) है, इसमें यदि मग्न होना नहीं चाहते हो तो हे मनुष्य ! इसको दूर से ही त्याग दो ॥८०॥

जल्पन्ति सार्द्धमन्येन पश्यन्त्यन्यं सविभ्रमाः ।
हृदये चिन्तयन्त्यन्यं प्रियः कोनाम योषिताम् ॥ ८१ ॥

दोहा—

मन में कछु बातन कछू, नैनन में कछु और ।
चित की गति कछु और ही, यह प्यारी किहि ठौर ॥ ८१ ॥

स्त्री बातें किसी और पुरुष से करती है, विलास सहित देखती किसी और को ही है और हृदय में किसी और की हो चिन्ता करती है फिर कहो स्त्रियों का प्यारा कौन है ॥८१॥

मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदि हालाहलमेव केवलम् ।
अतएव निपीयतेऽधरो हृदयं मुष्टिभिरेव ताड्यते ॥ ८२ ॥

दोहा—

अधरन में अमृत बसत, कुच कठोरता वास ।
याते इनकौ लेत रस, उनको मर्दन त्रास ॥ ८२ ॥

स्त्रियों की वाणी में मधु होता है । किन्तु हृदय में केवल हलाहल विष होता है, इसलिए पुरुष उनके अधरामृत का पान करते हैं और हृदय को मुष्टि से तारण करते हैं ॥८२॥

अपसर सखे दूरादस्मात्कटाक्षविषानलात्
प्रकृतिविषमाद्योषित्सर्पाद्विलासफणाभृतः ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

इतरफणिना दष्टः शक्याश्चिकित्सितुमौषधै-
श्चतुरवनिताभोगिग्रस्तं त्यजन्तिहि मन्त्रिणः ॥ ८३ ॥

दोहा—

मंत्र यंत्र औषधन ते, तजत सर्प विष लाग ।
यह क्यों हूँ उतरत नहीं, नारि नयन कौ नाग ॥ ८३ ॥

हे सखे ! कटाक्ष विषानल धारण करने वाले, स्वभाव से ही विषम और विलास रूपी फणाधारी इस स्त्री सर्प से दूर भागो; क्योंकि अन्य सर्पों से डसा हुआ मनुष्य औषधियों से अच्छा हो सकता है, परन्तु चतुर स्त्री रूपी सर्प से डसे हुए को यांत्रिक भी त्याग देते हैं ॥८३॥

विस्तारितं मकरकेतनधीवरेण
स्त्रीसंज्ञितं वडिशमत्र भवाम्बुराशौ ।
येनाचिरात्तदधरामिषलोलमर्त्य-
मत्स्यान्विकृष्य पचतीत्यनुरागवह्नौ ॥ ८४ ॥

दोहा—

काम भील भव सिन्धु में, बंसी-नारी डार ।
मीन-नरन कौं गहि पचत, प्रेम अग्नि कौं बार ॥ ८४ ॥

इस संसार रूपी समुद्र में कामदेव रूपी धीमर ने स्त्री रूपी जाल फैलाया है, जिसके द्वारा अधर पल्लव मांस के लोभी मनुष्य रूपी मत्स्यों को आकर्षण कर अनुराग रूपी अग्नि में पकाता है ॥८४॥

कामिनीकायकान्तारे कुचपर्वतदुर्गमे ।
मा सञ्चर मनःपान्थ तत्रास्ते स्मरतस्करः ॥ ८५ ॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

कुण्डलियाँ—

एरे मन मेरे पथिक तू न जाहु इह ओर ।
तरुणी तन वन सघन में कुच पर्वत वरजोर ।
कुच पर्वत वरजोर चोर एक वहाँ बसत है ।
कर में लिए कमान बान पाँचौ बरसत है ।
लूट लेत सब साज पकर कर राखत चेरे ।
मूँद नैन अरु कान भुल्यान्यौ तूं कित एरे ॥ ८५ ॥

हे मन रूपी पथिक ! स्त्रियों का शरीर रूपी वन कुच रूपी पर्वतों के कारण अत्यन्त दुर्गम है, तू उसमें मत जा, क्योंकि वहाँ कामदेवरूपी चोर रहता है ॥८५॥

व्यादीर्घेण चलेन वक्रगतिना तेजस्विना भोगिना
नीलाब्जद्युतिनाऽहिना वरमहं दष्टो न तच्चक्षुषा ।
दष्टे सन्ति चिकित्सका दिशि दिशि प्रायेण धर्मार्थिनो
मुग्धाक्षीक्षणवीक्षितस्य नहि मे वैद्यो न चायौषधम् ॥८६॥

छप्पय—

महा भयंकर चपल वक्रगति अरु फणधारी ।
डसे कालिया नाग नहीं कछु विपदा भारी ।
करैं चिकित्सा वैद धर्म हित दैंय जिबाई ।
पै नहिं कोऊ वैद चिकित्सा और उपाई ।
जेहि डसत भुजंगिनि त्रिय चपल करि कटाक्ष सो नहिं जियत ।
यह जानि विदुपजन जगत में विषय रूप विष किमि पियत ।८६।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

बहुत लम्बा, चंचल, टेढ़ी चाल वाला, कांतिमान और फण धारी नीलकमल के समान कृष्ण सर्प यदि काट ले तो उत्तम है, परन्तु स्त्री के कटाक्ष से काटा हुआ अच्छा नहीं, क्योंकि सर्प के काटे हुए के बचाने वाले धर्मार्थी मनुष्य प्रायः प्रत्येक देश में होते हैं परन्तु सुन्दर नेत्र वाली स्त्री के दृष्टि से काटे हुए को बचाने के लिए न कोई वैद्य है और न कोई औषध है ।।८६।।

इह हि मधुरगीतं नृत्यमेतद्रसोऽयं
स्फुरति परिमलोऽसौ स्पर्श एष स्तनानाम् ।
इति हतपरमार्थैरिन्द्रियैर्भ्राम्यमाणो
ह्यहितकरणदक्षैः पञ्चभिर्वञ्चितोऽस्मि ।।८७।।

छप्पय—

कान निरन्तर गान तान सुनिवौ ही चाहत ।
लोचन चाहत रूप रैन-दिन रहत सराहत ।
नासा अतर सुगन्ध चहत फूलन की माला ।
त्वचा चहत सुख सेज संग कोमल तन वाला ।
रसनाहू चाहत रहत नित खारे मीठे चरपरे ।
इन पंचन या पर-पंचसों भूपन कों भिक्षुक करे ।।८७।।

यह कैसा मधुर गीत है, यह कैसा उत्तम नृत्य है, इस वस्तु का रस कैसा स्वादिष्ट है, यह सुगन्धि कैसी उत्तम है, और यह स्तन स्पर्श करने से कैसा अच्छा सुख देते हैं, हे मनुष्य ! इन पाँचों विषयों में भ्रमता हुआ, इस प्रकार परमार्थ के नष्ट करने वाली और नरकादिक के साधन भूत इन पांचों इंद्रियों से तू ठगाया गया है ।।८७।।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

न गम्यो मन्त्राणां न च भवति भैषज्यविषयो
न चापि प्रध्वंसं व्रजति विविधैः शांतिकशतैः ।
भ्रमावेशादंगे किमपि विदधद्भंगमसकृत्
स्मरोपस्मारोऽयं भ्रमयतिदृशं घूर्णयति च ॥ ८८ ॥

दोहा—

मन्त्र दवा अरु आप सों, वेदन मिटै न बैद ।
कामवाण सों भ्रमत्त मन, कैसे मिटिहै कैद ॥ ८८ ॥

यह कामदेव रूपी अपस्मार रोग भ्रम के आवेश से शरीर में दुःखदाई कर्म करता हुआ मन को भ्रमाता है और नेत्रों को घुमाता है इस रोग में न तो मंत्रों की कुछ गति है, न औषधि कुछ काम कर सकती है और न नाना प्रकार के शांति कर्म पाठपूजा आदि से यह नाश को प्राप्त होता है ॥८८॥

जात्यन्धाय च दुर्मुखाय च जराजीर्णाखिलांगाय च
ग्रामीणाय च दुष्कुलाय च गलत्कुष्ठाभिभूताय च ।
यच्छन्तीषु मनोहरं निजवपुर्लक्ष्मीलवश्रद्धया
पण्यस्त्रीषु विवेककल्पलतिकाशस्त्रीषु रज्येत कः ॥ ८९ ॥

छप्पयय—

जाति हीन, कुल हीन, अंध, कुत्सित्त, कुरूप नर ।
जरा-ग्रसित्त कृशगात गलित कुष्ठी अरु पांडर ।
ऐसौ हू धनवान होय तो आदर वा कौ ।
अपनौ गात विछाय लेत रस सर्बस ताकौ ।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

गनिका विवेक की बेल कों रुँदन करन वारी निरखि।
बच रहे बड़े कुलवन्त नर, रचत पचत मूरख हरषि ॥ ८९ ॥

जो जन्मांध, कुरूप, वृद्धावस्था से शिथिल, गवाँर, नीच जाति और कोढ़ी को भी अल्पद्रव्य की आशा से अपना सुन्दर शरीर समर्पण कर देती है और जो विवेकरूपी कल्पलता के लिए छुरी के समान है ऐसी वेश्याओं से रमण करने की कौन बुद्धिमान इच्छा करेगा ॥८९॥

वेश्यासौ मदनज्वाला रूपेन्धनसमेधिता।
कामिभिर्यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च ॥९०॥

दोहा—

गनिका कनिका अगिन की, रूपसमिध मजबूत।
होम करत कामी पुरुष, धन यौवन आहूत ॥९०॥

यह वेश्या तो सुन्दरता रूपी ईंधन से प्रचण्ड रूप से जलती हुई कामाग्नि है और कामी पुरुष इसमें अपने यौवन और धन की आहुति देते हैं ॥९०॥

कश्चुम्बति कुलपुरुषो वेश्याधरपल्लवं मनोज्ञमपि।
चारभटचौरचेटकविटनटनिष्ठीवनशरावम् ॥९१॥

सोरठा—

गनिका के मृदु ओठ, को कुलीन चुम्बन करैं।
नट, भट, विट, ठग, गोठ, पीक-पात्र है सबन को ॥९१॥

वेश्या का अधर पल्लव यदि सुन्दर है तो भी उसको कुलीन पुरुष नहीं चुम्बता है क्योंकि वह तो ठग, योद्धा, चोर, दास, नट और जारों के थूकने का पात्र है ॥९१॥

इति कामिनी निगर्हणम्

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

अथ सुविरक्त प्रशंसा

धन्यास्त एव तरलायतलोचनानां
तारुण्यरूपघनपीनपयोधराणाम् ।
क्षामोदरोपरि लसत्त्रिवलीलतानां
दृष्ट्वाकृतिं विकृतिमेति मनो न येषाम् ॥९२॥

दोहा—

क्षीण लंक अरु पीन कुच, लखि तिय के दृगतीर ।
जे अधीर नहिं करत मन, धन्य धन्य ते धीर ॥९२॥

चंचल और विशाल नेत्र वाली, तरुण रूपवान् और दृढ़ पुष्ट स्तन वाली तथा जिनके क्षीण उदर पर त्रिवली शोभायमान है ऐसी स्त्रियों को देख कर जिनका मन विकार को प्राप्त नहीं होता है, वही धन्य हैं ॥९२॥

शुभ्रं सद्म सविभ्रमा युवतयः श्वेतातपत्रोज्ज्वला
लक्ष्मीरित्यनुभूयते स्थिरमिव स्फीते शुभे कर्मणि ।
विच्छिन्ने नितरामनंगकलहक्रीडात्रुटत्तन्तुकं
मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति भ्रश्यद्दिशो दृश्यताम् ॥९३॥

दोहा—

शुभकर्मन के उदय में, गृहतिय चित्त सब ठौर ।
अस्त भये तीनों नहीं ज्यों मुक्ता बिन डोर ॥९३॥

स्वच्छ गृह, उत्तम हावभाव युक्त युवती, श्वेतछत्र सहित शोभायमान लक्ष्मी, तब ही स्थिरता के साथ भोगी जाती है जबकि पुण्य की

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

वृद्धि होती है, परन्तु पुण्य के क्षीण होने पर सम्पूर्ण भोग विलास कामदेव की क्रीडा के कलह से टूटे हुए हार के मोतियों के समान भ्रष्ट होकर देशान्तरों में लुप्त हो जाते हैं ॥९३॥

सदा योगाभ्यासव्यसनवशयोरात्ममनसो-
रविच्छिन्ना मैत्री स्फुरति यमिनस्तस्य किमु तैः ।
प्रियाणामालापैरधरमधुभिर्वक्त्रविधुभिः
सनिश्वासामोदैः सकुचकलशाऽऽश्लेषसुरतैः ॥९४॥

छप्पय—

करत योग अभ्यास आप मन बस करि राख्यौ ।
परब्रह्म सों प्रीति प्रगट जिन यह सुख चाख्यौ ।
तिनकों तियके संग कहा सुख वासन ह्वै है ।
कहा अधर मधुपान कहा लोचन छबि छ्वै है ।
मुखकमल श्वास सौगन्ध उर कहा कठिन कुच कौ परस ।
अरु परिरम्भन चुम्बन कहा, योगी जन मन एक-रस ॥९४॥

जिनके आत्मा और मन को सदा योगाभ्याम ही के व्यसन में मित्रता प्रगट होती है उनको प्रिय स्त्रियों के सम्भाषण, मुख अधरामृत चन्द्रश्वासों के सुगन्धि-सहित पवन, और कुचकलशों को हृदय से लगा कर सुरतों से क्या प्रयोजन है ॥९४॥

अजितात्मासु सम्बद्धः समाधिकृत चापलः
भुजंग कुटिलः स्तब्धो भ्रूविक्षेपः खलायते ॥९५॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

दोहा—

तिय कटाक्ष खल सरस है, करत समाधिहि भंग ।
प्राकृत जन संसर्ग रत, शठ इव कुटिल भुजंग ।।९५।।

अजितेन्द्रिय मनुष्यों से सम्बन्ध रखने वाला, समाधि (चित्तैकाग्रता अथवा मानसिक पीड़ाओं) में अत्यन्त चञ्चलता करने वाला, भुजङ्ग (सर्प अथवा जार) के समान कुटिल, और स्तब्ध यह स्त्रियों का कटाक्ष खल के समान आचरण करता है ।।

मत्तेभकुम्भ परिणाहिनि कुङ्कुमार्द्रे
कान्ता पयोधर तटे रसखेद खिन्नः ।।
वक्षौनिधाय भुज पञ्जर मध्यवर्ती
धन्यःक्षपा क्षपयति क्षण लब्धनिद्रः ।।९६।।

छप्पय—

कुंकुम कर्दमयुक्त मत्तगज कुम्भ बने मनु
कान्ता कुच-तट माँहि सने रस खेद खिन्न जंनु ।
तेहि भुज पंजर मध्य रहे सुख सों लिपटाने ।
क्षण इक निद्रा लहे क्षपा बीतत नहिं जाने ।
इमि निज वक्षस्थल ताहि सो-जोरि रहे जे सुभग नर ।
हैं तेई यहि संसार में धन्यवाद के योग्यवर ।।९६।।

जो मनुष्य रस खेद से खिन्न हो कर मत्त हाथी के कुम्भों के समान विस्तीर्ण तथा कुंकुम से भींजे हुए स्त्री के स्तनों पर अपने वक्षः स्थल को रख कर स्त्री की भुजारूपी पञ्जर के मध्यस्थ हो कर क्षण मात्र भी निद्रालु हो कर रात्रि व्यतीत करता है, वह धन्य है ।।

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

सुधामयोऽपि क्षय रोग शान्त्यै
नासाग्र मुक्ता फल कच्छलेन।
अनंग संजीवन दृष्टि शक्तिर्मुखामृतं
ते पिबतीवचन्द्रः ॥९७॥

दोहा—

मनसिज वर्धक अमृतमय, क्षयी हरण शशि जान।
नासा मोती मिस किये, कर अधरामृत पान ॥९७॥

हे सुन्दरी ! अमृतमय अतएव कामदेव के चैतन्य करने की दृष्टि-सामर्थ्य रखने वाला चन्द्रमा क्षय रोग की शान्ति के लिए नाक के मोती के मिस से तेरे अधरामृत का पान करता है।

दिशवन हरिणीभ्यां वंश काण्डच्छवीनां
कवल मुपलकोटिच्छिन्नमूलं कुशानाम् ॥
शुक युवति कपोला पाण्डु तांबूलवल्ली
दल मरुणा नखाग्रैः पाटितं वा वधूभ्यः ॥९८॥

दोहा—

वन-मृगीन के देनकों, हरे हरे तृण लेहु।
अथवा पीरे पान कौ, बीरा बधुवन देहु ॥९८॥

हे मनुष्यो तुम या तो वन-मृगियों के लिए बांस के दण्ड के समान छवि वाली पत्थर के अग्रभाग से कटे हुए मूल वाले कुशाओं के ग्रास दो; अथवा उत्तम स्त्रियों के लिए अरुण नखों से तोड़े हुए शुकयुवती (सुई) के कपोल के समान किंचित पाण्डुवर्ण वाले ताम्बूल दो ॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

वैराग्ये सञ्चरत्येको नीतौ भ्रमति चापरः ।
शृंगारे रमते कश्चिद्भुवि भेदाः परस्परम् ॥९९॥

दोहा—

काहू कै वैराग्य रुचि, काहू के रुचि नीति ।
काहू कै शृंगार रुचि, जुदी जुदी परतीति ॥९९॥

कोई पुरुष वैराग्य में संचार करता है, कोई मनुष्य नीति में भ्रमण करता है, और कोई शृंगार में रमता है, इस प्रकार मनुष्यों की इच्छा परस्पर एक दूसरे से भिन्न हैं। नीति शृंगार और वैराग्य तीनों शतकों के निर्माण करने से भर्तृहरिजी का यह प्रयोजन है कि जिसकी जिसमें रुचि हो, वह उसी को बिचारे ॥

यद्यस्य नास्ति रुचिरं तस्मिंस्तस्या स्पृहा मनोज्ञेऽपि ।
रमणीयेऽपि सुधांशौ न मनःकामाः सरोजिन्याः ॥१००॥

दोहा—

जो जाके मन भावतो, ताको तासों काम ।
कमल न चाहत चाँदनी, विकसत परसत धाम ॥१००॥

जो वस्तु जिसको प्रिय नहीं, वह चाहे जैसी सुन्दर क्यों न हो परन्तु उसको अच्छी नहीं लगती; जैसे चन्द्रमा सबको प्रिय है, परन्तु सूर्य विकासिनी कमलिनियों की प्रीति उस पर नहीं होती, अर्थात् कमलिनियों को चन्द्रमा अच्छा नहीं लगता है ॥

शृंगार शतकं सम्पूर्णम् ॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

परिशिष्ट

वाले लीलामुकुलितममी सुन्दरा दृष्टिपाताः
किं क्षिप्यन्ते विरम विरम व्यर्थ एष श्रमस्ते।
सम्प्रत्यन्ये वयमुपरतं बाल्यमास्था वनान्ते
क्षीणो मोहस्तृणमिव जगज्जालमालोकयामः ॥१॥

लीलामय सुन्दर सलज कत डारत तू दीठि।
व्यर्थ होइगौ श्रम सकल, यौवन फेरी पीठि॥
मोह न अब व्यापत हमैं वन विचरन कौं जात।
जग के सब जंजाल अब तृण जिमि तुच्छ करवात॥१॥

हे वाले, बिलास से मुकुलित करके इन सुन्दर दृष्टिपातों को हमारे ऊपर क्यों फेंकती है, तू इस काम से रुक जा। तेरा यह परिश्रम सब व्यर्थ ही है क्योंकि अब हम वे नहीं रहे दूसरे हो गये हैं। वह हमारा बालकपन शान्त हो गया, हमारी अवस्था अब वन में रहने की है, मोह हमारा दूर हो गया, अब हम सारे संसार जाल को तिनके के समान तुच्छ देखते हैं॥१॥

इयं बाला मां प्रत्यनवरतमिन्दीवरदल-
प्रभाचोरं चक्षुः क्षिपति किमभिप्रेतमनया।
गतो मोहोऽस्माकं स्मरशबरबाणव्यतिकर-
ज्वलज्ज्वालाः शान्तास्तदपि न वराकी विरमति॥२॥

कमल-पत्र लाजन गड़त, लखि तव नयन-विलास।
मदन-वधिक-शर नहिं वधै, फेरि कौनसी आस॥२॥

यह वाला कमल पत्र की शोभा को चुराने वाली दृष्टि को निरंतर मेरे ऊपर डालती है, इसका क्या अभिप्राय है। अब हमारा मोह दूर हो गया, कामरूपी भील के वाणों के लगने से उठने वाली ज्वाला शांत हो गई तो भी यह मूर्खा नहीं रुकती॥२॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

किं कन्दर्प करं कदर्थयसि किं कोदण्डटङ्कारितं
रे रे कोकिल कोमलं कलरवं किं त्वं वृथा वल्गसे ।
मुग्धे स्निग्धविदग्धमधुरैर्लोलैः कटाक्षैरलं
चेतश्चुम्बितचन्द्रचूडचरणध्यानामृतं वर्तते ॥३॥

कष्ट करतु कंदर्प क्यों, व्यर्थ धनुष टंकार ।
कोकिल कलरव हू वृथा, तिमि कटाक्ष की मार ॥
मनुआँ शिव-चरणनि लगौ, करत अमिय-रस पान ।
अब न कटाछनु रीझिहै, शंकर ही कौ ध्यान ॥३॥

अरे कंदर्प, धनुष की टंकारों से तू हाथ को क्यों दुख देता है ? हे कोकिल, तू भी अपने कोमल कलरव को व्यर्थ क्यों बोल रहा है ? और हे भोली भामिनि, ये तेरे स्नेह और चतुरता से भरे भोले-भाले मधुर और चंचल कटाक्ष व्यर्थ हैं क्योंकि हमारे चित्त ने अब शिवजी के चरणों के ध्यान का अमृत पी लिया है ॥३॥

यदासीदज्ञानं स्मरतिमिरसञ्चारजनितं
तदा सर्वं नारीमयमिदमशेषं जगदभूत् ।
इदानीमस्माकं पटुतरविवेकाञ्जनदृशां
समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते ॥४॥

काम-रूप-तम जब छयौ, उपज्यौ अति अज्ञान ।
नारी-मय दीसै जगत ताही में कल्यान ॥
अंजन लग्यौ विवेक कौ, समता पाई नैन ।
त्रिभुवन अब तौ ब्रह्ममय, ही तल हू में चैन ॥४॥

काम रूपी अन्धकार के फैलने से उत्पन्न जब अज्ञान था तब यह सम्पूर्ण संसार हमको कामिनीमय दीखता था । और अब हमारी सुन्दर विवेक रूपी अंजन युक्त आँखों की दृष्टि समता को प्राप्त हो कर त्रिभुवन को भी ब्रह्म मानती है ॥४॥

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyder

समिति के अन्य प्रकाशन

१.	साहित्य— आलोचना के सिद्धान्त	०.५०
२.	द्वितीय महासमर (व्रजभाषा काव्य)	०.५०
३.	प्रसाद का आँसू (आलोचना और व्याख्या)	२.००
४.	विश्राम (नाटक)	२.००
५.	नीतिशतक (व्रज-भाषा काव्यानुवादसहित)	१.००
६.	मंजरी (खड़ी बोली की रचनाएँ)	२.००
७.	वृन्दावन (व्रज-भाषा की रचनाएँ)	१.२५
८.	झाँसी की रानी (नाटक)	१.००
९.	तीन फूल (अनुवाद श्री रूपनारायण चतुर्वेदी 'निधिनेह')	०.७५
१०.	वनवासी (श्री भोजराज चतुर्वेदी)	१.५०
११.	अँग्रेजी नाट्य-साहित्य खंड १	१ ५०
१२.	शृंगार-शतक (भर्तृहरि)	१.००
१३.	वीरजा—शिशुपाल सिंह 'शिशु'	०.५०
१४.	अँग्रेज़ी नाट्य-साहित्य खंड २ (प्रैस में)	१.५०
१५.	यूरोप की डायरी (प्रैस में)	३.००
१६.	संत ज्ञानेश्वर (श्री जगमोहनलाल चतुर्वेदी)	३.००

शीघ्र ही प्रकाशित होंगे :—

१. वैराग्य शतक (भर्तृहरि)
२. यदुवंश (महाकाव्य) स्व. श्री हरदयालु सिंह
३. चतुर्वेदी समाज के लोकगीत

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hyderabad

१२

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hydera

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hydera

This PDF you are browsing now is in a series of several scanned rare books and manuscripts from Sanskrit Academy, Hyderabad.

Address:

Manikeshwar Nagar Kaman,

Osmania University, Tarnaka,

Hyderabad, Telangana, 500007

https://sanskritacademy.net/

https://archive.org/details/@sanskrit_academy_hyd

The Academy is currently led by Director Shri Madhushan Penna.

His CV:

Prof. Penna madhusudan,

Director Sanskrit Academy, Hyderabad

Areas of interest

Yoga shastra, nyaya, yoga and vedanta philosophy.

Works

3 mahakavyas, 10 laghukavyas, 30 translations and 140 edited books

Sahitya Academy Awardee for Mahakavya on Gulabrao Maharaj.

Translated the Marathi Jnaneshwari in 9000 Sanskrit shlokas.

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hydera

Honours

Honorary D.Litt by National Sanskrit University, Tirupati AP. for his unique contribution in Indian Philosophy.

-Vachaspati

-Yoga Ratna

-Shastra nidhi

-Utkrisht Sanskrit Pandit

-Yajna Surabhi

-Shastri (Karavir Peeth)

-Shastra Ratnakara

Awards

- Sahitya Academy award

- Maharashtra govt sadhana award

- Pt. Satvalekar award

- Pt. Latkar shastri award

- Pt. Ghatate award

- Somnath Trust Award with Gold Medal and title of Best Scholar

- Sribhashyam national award

and many other.

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding Ravi Parimi, Hydera

Foreign Travel

The Netherlands, Canada for World Sanskrit Conference 2018.

Indian embassy, Nepal 2023

DVDs on yoga, Indian philosophy and Sanskrit Literature.

mspenna67@gmail.com

Digitization by eGangotri Trust/Sarayu Trust, New Delhi

Funding for Digitization: Shri Ravi Parimi, Hyderabad

Sanskrit Academy, Hyderabad Collection. c/o Hon. Dir. Shri Madhusudan Penna